स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

कलीसिया वृद्धि के लिये

व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE, BUT PLEASE CREDIT SOURCE

व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार

विषय सूची

1. व्यक्तिगत् सुसमाचार-प्रचार क्या है ?
2. तुम मेरे गवाह होंगे
3. 26 मुखाग्र पद - आत्मा-जीतने वाले के लिये
4. तुम्हें नया जन्म पाना अवश्य है
5. गवाह बनने के संबंध में यीशु ने क्या कहा था
6. गवाह बनने के संबंध में बाइबल की अन्य शिक्षाएं
7. परमेश्वर द्वारा पहचाने जाना और उसकी महिमा की पहचान कराना
8. उसके आगमन के दिन को शीघ्र लाना
9. गवाह बनने हेतु कुछ व्यावहारिक मार्गदर्शन
10. एक धार्मिक गवाह की विशेषताएं
11. व्यक्तिगत् सुसमाचार-प्रचार के लिये सात कदम
12. खोए हुओं के लिए प्रभावकारी रूप से प्रार्थना करना
13. अपनी गवाही बताना
14. अनंतकालिक परिणाम उत्पन्न करने वाले वार्तालाप
15. पश्चताप् हेतु लोगों को आह्वान देना
16. प्रभाव के क्षेत्र
17. उद्धार की प्रार्थना/चिन्ह लगाया गया नया नियम
18. सुसमाचार-प्रचार में सहायता हेतु कुछ साधान और योजनाएं
19. चार आध्यात्मिक नियम
20. रोमी-रास्ता
21. शब्दरहित पुस्तक
22. पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार
23. चेला बनाना
24. दूसरों को आत्मा-जीतने वाले बनने में सहायता करना

25. जब परमेश्वर हमें बाहर भेजता है
26. सुसमाचार-प्रचार क्षेत्र के लिए तैयारी
27. सताव का सामना करना
28. पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर जाना
29. यह कटनी का समय है

पाठ 1

व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार क्या है ?

1. "व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार" वह प्रत्येक बात है जो एक विश्वासी कहता और करता है ताकि औरों को मसीह यीशु में विश्वास करने के द्वारा उपलब्ध किये गये उद्धार के सुसमाचार का परिचय दे और उसकी ओर उनकी अगुवाई करे।

   (क) इसे "व्यक्तिगत" सुसमाचार-प्रचार कहते हैं क्योंकि यह विश्वासियों के द्वारा व्यक्तिगत रूप से किये जाने वाली सुसमाचार सेवा की ओर संकेत करता है और इस प्रकार से वह किसी क्रूसेड, फिल्म शो, रेडियो सुसमाचार सेवा इत्यादि से बिल्कुल विपरीत है।

   (ख) "सुसमाचार-प्रचार" "सुसमाचार" से संबंधित प्रत्येक बात अर्थात् परमेश्वर से मुफ्त में प्राप्त होने वाली क्षमा, उद्धार और अनंत जीवन का दान के "शुभ संदेश" की ओर संकेत करता है।

   (ग) व्यक्तिगत् सुसमाचार-प्रचार और मित्रता-सुसमाचार-प्रचार एक जैसे लगते हों परन्तु एक ही नहीं है। अंतर कुछ ऐसा है कि मित्रता-सुसमाचार-प्रचार में एक अतिरिक्त पहलू यह होता है कि जिस व्यक्ति को सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है उसके साथ निरंतर का आपसी संबंध होता है।

   (घ) सुसमाचार-प्रचार "आत्मा-जीतने" और "गवाही देने" के समान होता है परन्तु दोनों के बीच में अर्थ का थोड़ा सा अंतर है। इस पाठ्यक्रम में इन तीनों शब्दों का प्रयोग प्राय: एक दूसरे के स्थान पर किया गया है।

   (ङ) इन तीनों शब्दों से संबंधित एक और शब्द "शहीद" शब्द है। "शहीद" यह शब्द "गवाही" के लिये उपयोग किये गये यूनानी शब्द से आता है। प्रारंभिक मसीहियों को प्राय: मसीह के लिए अपनी गवाही देने के कारण मार डाला जाता था। नि:संदेह वे लोग अपने गवाही देने में इतने साहसी थे कि उन्होंने अपने विश्वास के लिये अपने प्राण दे दिये।

2. बाइबिल हमें आदेश देती है कि जाओ और चेले बनाओ, बप्तिस्मा दो और मसीह के द्वारा सिखायी गयी प्रत्येक बात को मानने की शिक्षा उन्हें दो। मत्ती 28:19-20

3. मसीहियों को अपने विश्वास के निमित्त, सर्वप्रथम अपने घर में (उनका "यरूशलेम"), फिर अपने आस-पास के क्षेत्र में (उनका "यहूदिया" और "सामरिया"), और पृथ्वी की छोर तक, गवाह बनने का आदेश दिया गया है। प्रेरितों 1:8

4. वह शुभ संदेश क्या है जिसकी घोषणा हम अपने सुसमाचार-प्रचार के द्वारा करते हैं ?

   (क) बाइबिल सिखाती है कि सब लोग पाप में जन्मे हैं। रोमियों 3:23; इफिसियों 2:1-3

   (ख) बाइबिल यह भी कहती है कि हम सब को अपने पापों के लिए एक पवित्र परमेश्वर के द्वारा दण्ड मिलेगा। रोमियों 6:23

   (ग) बाइबिल सिखाती है कि इस दण्ड से बचने का एक मात्र मार्ग यह है कि हम अपने पापों के लिये पश्चताप करें और विश्वास के द्वारा यीशु मसीह को ग्रहण करें। इफिसियों 2:8-9

चर्चा:

1. यदि हम जानते हैं कि किसी बीमारी के कारण कोई मरने पर हैं और हमारे पास उनकी बीमारी के ठीक होने का इलाज है, क्या हम उन्हें ठीक होने का वह इलाज नही बताएंगे?

2. समस्त लोगों में जानलेवा, आत्मिक बीमारी (पाप) पाई जाती हैं, और, हम मसीही होने के नाते, उस बीमारी के इलाज (यीशु) को जानते हैं। यह सच्चाई हमारे लिए मसीह यीशु के अद्‌भुत संदेश के निमित्त गवाह बनने हेतु बड़ी प्रेरणा बन जानी चाहिये। यह जानकर कि वे जो अपने आत्मिक बीमारी के लिये इस "इलाज" को अस्वीकार करेंगे वे नरक में अनंतकाल का जीवन बिताते रहेंगे इस से हमें प्रेरणा मिलनी चाहिए कि :

   (क) हम उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें और

   (ख) उन्हें अपने पापों से पश्चताप् करने का और मसीह की क्षमा और स्वर्ग में अनंत जीवन की प्रतिज्ञा को स्वीकार करने का आग्रह करें

पाठ 2

तुम मेरे गवाह ठहरोगे

1. सभी विश्वसियों को प्रचारक बनने के लिए नहीं बुलाया गया है, परंतु हर एक विश्वासी को गवाह बनने हेतु अवश्य बुलाया गया है।

2. हमें गवाह बनना चाहिये :

   (क) क्योंकि मसीह हमें आदेश देता है कि हम मनुष्यों के सम्मुख उसे स्वीकार करें। मत्ती 10:32, 33

   (ख) क्योंकि परमेश्वर का प्रेम हमें विवश करता है कि हम उसके उद्धार का संदेश दूसरों तक पहुंचाये। कुरिन्थ 9:16-19

   (ग) क्योंकि बाइबल हमें सिखाती है कि हम अपने मुख से मसीह का अंगीकार करें। रोमियों 10:9

   (घ) क्योंकि अनेक लोग अंधकार में हैं और उन्हें परमेश्वर के ज्योति की आवश्यकता है। 1 पतरस 2:9

   (ङ) क्योंकि लोगों की आवश्यकता है कि वे मसीह में प्राप्त स्वतंत्रता का शुभ संदेश सुनें और उसके साथ मेल मिलाप कर लें। 2 कुरिन्थ 5:18-19

   (च) क्योंकि मनुष्य की आत्मा समस्त संसार से मूल्यवान है। मरकुस 8:36

   (छ) क्योंकि अनेक लोग हैं जो परमेश्वर की और आशा की खोज में हैं। 1 पतरस 3:15

   (ज) क्योंकि निराशा से भरे संसार में हमारे पास उद्धार की एक ही आशा है। फिलिपियों 2:15

   (झ) क्योंकि हमारे हृदय में उसके वचन की गवाही आग जैसे जल रही है; खुल कर प्रगट होना चाहती है। यिर्मयाह 20:9

3. नीतिवचन 11:30 में लिखा है कि आत्माओं को जीतने वाला बुद्धिमान है।

नोट: "आत्मा जीतने का कार्य, एक निश्चित व्यक्ति की एक निश्चित उद्धारकर्ता को ग्रहण करने के लिये अगुवाई करने का एक निश्चित समय पर किया गया एक निश्चित प्रयास है।" -बिली सन्डे।

गवाह बनने के विभिन्न तरीके:

1. हम **<u>सार्वजनिक रूप से</u>** कलीसिया की सभाओं, प्रार्थना सभाओं, और विश्वासियों की अन्य सभाओं में, परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के बारे में और हमारे जीवन एवं स्वभाव को उसके उद्धार ने कैसे परिवर्तित किया है इसके बारे में बता कर गवाह बन सकते हैं।

2. हम **<u>व्यक्तिगत रूप से</u>** अपने मित्र, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ की प्रतिदिन की वार्ता में गवाह बन सकते हैं। यह संभवत: सब से कठिन काम है, तौभी सम्भवत: एक अत्यंत फलदायी उपाय भी है।

3. जब हमारा बप्तिस्मा होता है, तो वह एक सार्वजनिक गवाही होती है कि हम मसीह के साथ जुड़ गये हैं। यही सच्चाई तब प्रगट होती है जब हम यथाविधि एक कलीसिया से जुड़ जाते हैं, कलीसिया की सभा में भाग लेते हैं, और/या प्रभु भोज में सम्मिलित होते हैं। ये समस्त बातें हमारे विश्वास की गवाहियां है।

4. यीशु ने कहा है कि हमें अपने भले कामों के द्वारा गवाह, "ज्योति" बनना है। मत्ती 5:16

5. पतरस कहता है कि हम अविश्वासियों के मध्य अच्छा जीवन जीने के द्वारा गवाह बनते हैं - और परमेश्वर की महिमा का कारण ठहरते हैं। 1 पतरस 2:12

नोट : जिस प्रकार एक तालाब का पानी यदि बहता न हो तो गंदा और प्रदूषित हो जाता है, उसी प्रकार मसीही जीवन भूखा रह जाएगा और मर जाएगा यदि उसका अंगीकार न किया जाए और गवाही न दी जाए।

चर्चा:

- आप के जान-पहचान वालों में से कौन-कौन प्रभावशाली गवाह हैं ?
- विश्वासियों को, गवाह बनने के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है?

पाठ 3

26 मुखाग्र पद - आत्मा-जीतने वाले के लिये:

1. **यूहन्ना 1:12** - हम परमेश्वर की संतान बन सकते हैं।
2. **यूहन्ना 3:16** - परमेश्वर हम से प्यार करता और हमें अनंत जीवन देता है।
3. **यूहन्ना 14:6** - स्वर्ग के लिए एक मात्र मार्ग यीशु है।
4. **2 पतरस 3:9** - परमेश्वर नहीं चाहता है कि कोई नाश होवे ।
5. **लूका 10:27** - महान् आज्ञा (यही आज्ञा मत्ती 22:27-39, मरकुस 12:28-34 और व्यवस्थाविवरण 6:5 में भी पायी जाती है)।
6. **मत्ती 28:18-20** - महान् आदेश (यह आदेश कुछ अलग रूप में भजन 2:8; मरकुस 16:15-18; लूका 24:45-49; यूहन्ना 20:21-23 और प्रेरित 1:8 इन पदों में भी मिलता है)।
7. **शब्द रहित पुस्तक के लिये पद:**
   (क) **यूहन्ना 14:3** - सुनहरा पृष्ठ - स्वर्ग में परमेश्वर की ओर से हमारे लिये की गई उपलब्धि को दर्शाता है।
   (ख) **रोमियों 3:23** - काला पृष्ठ- हमारे पाप को दर्शाता है (यह पद नीचे दोहराया गया है)।
   (ग) **1 यूहन्ना 1:9** - लाल पृष्ठ -यीशु के बलिदान को दर्शाता है जो उसने हमारे पापों के लिये किया है।
   (घ) **प्रकाशितवाक्य 7:14** - सफेद पृष्ठ - परमेश्वर के द्वारा धोए गए हमारे साफ हृदय को दर्शाता है।
   (ङ) **2 पतरस 3:18** - हरा पृष्ठ - हमारी उस वृद्धि को दर्शाता है जो हम परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी कृपा में करते हैं।
8. **रोमी रास्ते के लिये पद**
   (क) **रोमियों 3:23** - सब ने पाप किया है, और सभी को पापों की क्षमा चाहिए।
   (ख) **रोमियों 6:23** - पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।

(ग) **रोमियों 5:8** - परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा उपाय उपलब्ध कराया है।

(घ) **रोमियों 10:9** - पाप का अंगीकार करें, मसीह यीशु में विश्वास करें और पापों की क्षमा को प्राप्त करें।

9. **इफिसियों 2:8-9** - परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा विश्वास ही से हमारा उद्धार हुआ है, न कि हमारे किसी भी काम के द्वारा।

10. **प्रकाशितवाक्य 3:20** - हम मसीह को व्यक्तिगत् रूप से आमंत्रित करने के द्वारा ग्रहण करते हैं।

11. **कुरिन्थियों 10:13** - परमेश्वर हमें हर प्रकार की परीक्षा का सामना करने की सामर्थ देता है।

12. **यूहन्ना 3:18** - जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं, हम नया जन्म पाते हैं।

13. **फिलिप्पियों 4:13** - हम परमेश्वर की सहायता से सब कुछ कर सकते हैं।

14. **1 कुरिन्थियों 15:3-4** - मसीह ने पुनः जीवित होने के द्वारा मृत्यु पर विजय पायी है।

15. **यूहन्ना 10:10** - परमेश्वर अपने बच्चों को बहुतायत का जीवन प्रदान करता है।

16. **यशायाह 41:10** - हम निडरता से जीवन जी सकते हैं क्योंकि परमेश्वर सदैव अपनी संतानों के साथ है। वह हमें बल देता है और हमारी सहायता करता है।

पाठ 4

तुम्हें नया जन्म पाना अवश्य है

प्रस्तावना- यूहन्ना 3 अधयाय में हमारे पास इस का सुंदर वर्णन है कि यीशु ने अपने समय में एक धार्मिक गुरू को परमेश्वर के राज्य के बारे में कैसे समझाया था। इस वृत्तांत में हमें कौनसे सिद्धांत मिल सकते हैं जो आज एक बेहतर सुसमाचार प्रचारक बनने में हमारी सहायता कर सकते हैं?

यूहन्ना 3:1-18 पढिये

1. कई बार, यीशु का अनुयायी होना समाजिक रूप से स्वीकार नहीं किया जाता है।

   (क) निकेदिमुस, एक प्रतिष्ठित धार्मिक गुरू था; वह रात के समय में यीशु के पास आया था। क्योंकि वह नहीं चाहता था कि लोग यह जानें कि वह यीशु के साथ था।

   (ख) इसी प्रकार से, संसार में आज ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ यीशु के अनुयायी होना स्वीकार नहीं किया जाता।

2. यीशु ने निकेदिमुस को समझाया कि परमेश्वर का राज्य इस संसार का नहीं है। इसी प्रकार से, हमें लोगों की यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि आत्मिक जीवन, अर्थात परमेश्वर के साथ मेल होने का मार्ग, मात्र परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही उपलब्ध है।

   (क) यीशु ने निकेदिमुस से कहा कि उसे नया जन्म पाना अवश्य है।

   (ख) परमेश्वर के राज्य (उसके परिवार) में, प्रवेश करने हेतु हमें हमारे शारीरिक जन्म के अलावा एक और दूसरा आत्मिक जन्म लेने की आवश्यकता है।

   (ग) परमेश्वर के आत्मा के द्वारा प्राप्त होने वाला यह जन्म हमारे लिये एक अलौकिक प्रावधान है जो यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा उपलब्ध कराया गया है।

   (घ) हम ऐसा कुछ नहीं कर सकते जिसके द्वारा हम परमेश्वर के राज्य (उसके परिवार) के योग्य हो जाए या उसकी सदस्यता प्राप्त करें। यह मानव जन्म

या जीवन के द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह मात्र परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जन्म लेने से ही उपलब्ध होता है।

(ङ) निकेदिमुस भी, एक प्रतिष्ठित धार्मिक गुरू होकर भी, नये जन्म के बिना, अर्थात परमेश्वर के आत्मा के द्वारा जन्म पाए बिना, परमेश्वर के राज्य (परमेश्वर के परिवार) में प्रवेश नहीं कर सकता था।

3. तर्कपूर्ण प्रश्न उठता है, "एक व्यक्ति को नया जन्म पाने की आवश्यकता क्यों है?"

(क) पौलुस प्रेरित इफिसियों 2:1 में कहता है, "उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।"

(ख) रोमी लोगों के लिए उसने लिखा, "क्योंकि सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" रोमियों 3:23

(ग) पापी मनुष्य आत्मिक रीति से "मृत" है; जब वे मसीह में विश्वास के द्वारा आत्मिक जीवन प्राप्त करते हैं, बाइबिल इसे नए जन्म के समान बताती है। केवल जिन्होंने नया जन्म पाया है उन्हों ने ही अपने पापों की क्षमा पा ली है और परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता बन गया है।

4. यह कैसे होता है ?

(क) इफिसियों 2:8-9 में लिखा है-"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन यह परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड़ करे।" जब कोई उद्धार पाता है, तब उसका नया जन्म हो गया है, वह आत्मिक रूप से नया बन गया, और नए जन्म के अधिकार से वह अब परमेश्वर की संतान है। मसीह यीशु में विश्वास करना ही हमारे लिये "नया जन्म" का साधन है, जिसके क्रूस पर प्राण देने के द्वारा हमारे पापों की कीमत चुकायी गई है।

(क) "इसीलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नयी हो गयी हैं।" 2 कुरिन्थ 5:17

(ख) यूहन्ना 1:12-13 हमें बताता है, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू

से, न ही शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परंतु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।"

पाठ 5

गवाह बनने के संबंध में यीशु ने क्या कहा था

1. "तुम पृथ्वी के नमक हो" मत्ती 5:13

(क) नमक दो काम करता हैं : यह सड़ने से बचाता है, और स्वाद को बढ़ाता है ।

(ख) ठीक इसी प्रकार, परमेश्वर का आत्मा, जो हम में अर्थात् उसकी संतानों में रहता है, संसार को शैतान की ताकतों से और पाप के प्रभाव से बचाने में सहायता करता है।

(ग) इसके अतिरिक्त, इस पृथ्वी पर का जीवन उस आनंद और शांति इत्यादि उपकारक बातों से भर जाता है, जो परमेश्वर की संतानों के लिये तब आती हैं जब वे उसके आत्मा से भर जाते हैं।

2. "तुम जगत की ज्योति हो" मत्ती 5:14-16

(क) ज्योति अंधकार पर जय पाती है। सच बात तो यह है कि कमरा जितना अधिक अंधकारमय होता है, ज्योति उतनी ही चमकदार होती हैं, दूर दूर से भी स्पष्ट दिखती है।

(ख) जिस प्रकार प्रकाश की किरण अत्यंत अंधकारमय रात को भी बेधती चली जाती है, हम में वास करने वाला परमेश्वर का आत्मा हमारे चारों ओर के आत्मिक अंधकार में ज्योति ले आता है।

(ग) हमें मसीह की वह ज्योति जो हम में है उसे मनुष्यों के सामने चमकने देना है ताकि "वे तुम्हारे भले कामों को देखकर, तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।"

3. हमें कहा गया है "सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को विवश करके ले आ।" लूका 14:15-23

(क) इस दृष्टांत में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य की तुलना एक बड़े भोज से, जेवनार से, की है। यह स्वर्ग की वही उपमा है जिसकी भविष्यवाणी यशायाह 25:6-9 में की गई है।

(ख) यीशु के बड़े भोज वाले दृष्टान्त में, भोज में आमंत्रित किये गये लोगों में से बहुतेरे इस जीवन की चिंताओं में पहले से इतने अधिक ध्यानमग्न थे कि उस आमंत्रण को स्वीकार नहीं कर सके। इसी प्रकार, आज बहुतेरे इस संसार की चिंताओं में पहले से इतने अधिक ध्यानमग्न है कि मसीह के द्वारा दिये जाने वाले अनंत जीवन के प्रस्ताव को ग्रहण नहीं करते।

(क) जब उस मनुष्य के मित्रों ने भोज में न आने के बहाने बताना आरम्भ किया, उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी - "नगर के बाजार, और गलियों में तुरंत जाकर कंगालो, टुण्डों, लगड़ों और अंधों को यहाँ ले आओ।" लुका 14:21

(ख) पुनः दूसरी बार भेजे गये इस आमंत्रण के बाद भी भोज के मेज पर जगह खाली पायी गयी। अतः स्वामी ने एक और निमंत्रण भेजा, ताकि भोज की मेज मेहमानों से भर जाए। इसी प्रकार, हमें, "सड़कों पर और बाड़ों की ओर" जाकर "लोगों को विवश करके" परमेश्वर के महान अनंतकालिक जेवनार की मेज के पास--उसके साथ के स्वर्ग के अनंत जीवन के पास ले आना है। लूका 14:23

4. हमें बहुत फल लाना है यूहन्ना 15:1-8

(क) हम बाइबिल में अनेक आत्मिक फलों के बारे पढ़ते हैं: सर्वप्रथम आत्मा का फल है: प्रेम, आनंद, मेल आदि। गलातियों 5:22-23

(ख) एक अन्य प्रकार का आत्मिक फल परमेश्वर के लिए नयी-नयी आत्माओं को लाना है। मत्ती 13:8

(ग) तीसरे प्रकार का आत्मिक फल हमारे अपने भले काम हैं। इफिसियों 2:10

(घ) मसीह दाखलता है, और हम शाखाएं हैं, हम अच्छा फल मात्र उसमें बने रह कर ही ला पाते हैं। युहन्ना 15:5

5. **"तुम मेरे गवाह होंगे।"** प्रेरितों 1:8

(क) उसके स्वर्गारोहण से ठीक पहले, यीशु ने अपने चेलों को **"यरूशलेम में, और सारे यहूदिया में, और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक"** उसके गवाह होने के निर्देश दिये थे।

(ख) ठीक इसी प्रकार से, हमें अपने गृह नगर में, आस-पास के इलाकों में, और सारे विश्व में उसके गवाह होना है।

पाठ 6

गवाह बनने के संबंध में बाइबल की अन्य शिक्षाएं

1. **हमें देश देश के लोगों के मध्य परमेश्वर की महिमा प्रकट करना है। भजन संहिता 67:1-7**

   (क) विद्यार्थियों के साथ इस अध्याय को पूरा पढ़िये और उन्हें भजन संहिता 67 के उन तीन पदों को देखने कहिये जहां हम 'देश-देश' शब्द को पाते हैं।

   (ख) उन्हें उन वाक्यों को भी खोजने दीजिये जहाँ 'जाति जाति' शब्द आता है।

   (ग) परमेश्वर चाहता है कि उसकी महिमा सारे देशों की सारी जातियों के लोगों के मध्य जानी जाये।

2. **हमें वहां जाना है जहां हमें परमेश्वर भेजता है, हमें तब जाना है, जब वह हमें भेजता है। यशायाह 6:8**

   (क) जब एक सारप ने अंगारे से याशायाह के मुंह को छुआ और परमेश्वर की आवाज ने उससे पूछा, **''मैं किस को भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा?,''** यशायाह ने तुरन्त प्रतिउत्तर में कहा, **''मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज।''**

   (ख) इसी प्रकार, जब परमेश्वर का वचन हमारे पास आता है, और हमें कहीं जाने का या कुछ करने का निर्देश देता है, हमें बिना विलम्ब किये उसकी इच्छा को पूरा करने के लिये तैयार और इच्छुक रहना है।

3. **हमें उसके गवाह बनना है।** यशायाह 43:9-12

   (क) यशायाह की यह चुनौती परमेश्वर के बच्चों को, परमेश्वर के सत्य के गवाह बनने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह आज हमारे समय में हमारे लिये उतना ही उचित है जितना यशायाह के दिनों में इस्राएलियों के लिए उचित था।

   (ख) शैतान के झूठ से भरे हुये संसार में, हमारे पास परमेश्वर की सच्चाई है।

हमें अपने परिवार में, पड़ोसियों में और मित्रों में अपने उस परमेश्वर के लिए जिसे हम जानते और प्यार करते हैं, गवाह बनना चाहिये।

(ग) हमें अपने शब्दों और कार्यों दोनों से -- पवित्र जीवन जीते हुए -- साहसपूर्वक गवाह बनना चाहिये।

4. हमें सब के लिये सब कुछ बनना है -- ताकि हम उन्हें जीत सकें। 1 कुरिन्थ 9:22-23

(क) प्रेरित पौलुस ने हमें अपने जीवन से उदाहरण देकर प्रोत्साहित किया है कि हमें प्रत्येक परिस्थिति के अनुकूल बनना हैं ताकि हम सुसमाचार सुनने की ओर लोगों का ध्यान प्राप्त कर सकें।

(ख) इसी प्रकार, हमें अपने आस पास के लोगों से, जिन्हें सुसमाचार की आवश्यकता है, सम्पर्क बना कर रखना चाहिये ताकि हम उनके विश्वास और भरोसे को जीत सकें और उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह और दया से परिचित करा सकें।

(ग) इसका अर्थ यह नहीं है की हमें ढोंगी या धूर्त होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हमें अपने आप को और अपने संदेश को, उन लोगों की भाषा और संस्कृति के अधिक से अधिक अनुकूल बनाना चाहिये जिनके मध्य पहुंचने का प्रयास हम कर रहे हैं।

5. हम मसीह के राजदूत हैं 2 कुरिन्थ 5:20

(क) हम राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु, सारी सृष्टि के अनंत एवं सर्वशक्तिमान सृजनहार के प्रतिनिधि हैं।

(ख) हम परमेश्वर की सामर्थ और अनुग्रह में होकर नाश हो रहे दुखित दयनीय संसार की ओर जाते हैं।

(ग) हम सर्वशक्तिमान, सार्वकालिक सृष्टिकर्ता परमेश्वर की संतान हैं। जिनके पास शांति नहीं हैं उन्हें हम परमेश्वर की शांति का प्रस्ताव देते हैं। हम उसके उस अनंत परिवार में नागरिकता का प्रस्ताव देते हैं तो जातीय बंध न से परे है।

गृहकार्य: विद्यार्थियों को, भजन 96 से लेकर 100 तक के अध्यायों में निम्नलिखित शब्दों के नीचे रेखा खींचने कहिये: "सारी पृथ्वी के लोगो" "सारे लोगो" "देश देश के लोगो" या ऐसा कोई शब्द जो सारी मनुष्य जाति को सम्बोधित करता है।

पाठ 7

परमेश्वर द्वारा जाने जाना और उसकी महिमा की पहचान कराना

-स्टीफन लीवरसेज

प्रस्तवना: परमेश्वर ने आपको जो जीवन दिया है उसके साथ आप सब से महत्त्वपूर्ण बात क्या कर सकते हैं?

- यह एक ऐसा प्रश्न है जो हम में से हर एक को अपने आप से करना अवश्य है।
- हमारे पास जीने के लिए मात्र एक जीवन है और देने के लिए मात्र एक जीवन है। हम इसे किस लिए जीएंगे? हम इसे किस लिए देंगे?
- बहुत-सी भली और बुरी बातें चिल्ला-चिल्लाकर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। मसीही व्यक्ति के लिए बड़ी समस्या यह नहीं है कि अच्छे और बुरे के बीच में किसका चुनाव करे, परन्तु यह है कि अच्छे और सब से अच्छे के बीच में किसका चुनाव करे।

1. **जब मसीह ने सत्तर मनुष्यों को दो-दो करके भेजा था, तब वे आनंद से लौटकर कहने लगे, "हे प्रभु, आपके नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।" लूका 10:17**

   (क) यीशु ने उनके आनंद में सहभागी होते हुए कहा, "मैंने शैतान को बिजली के समान स्वर्ग से गिरता हुआ देखा।" परन्तु उसने यह भी कहा: "इससे आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हैं।" वचन 18-20

   (ख) उस सामर्थ्य के द्वारा, जो मसीह में हमारी है, अन्धकार के राज्य पर विजय पाना एक अच्छी बात है।

   (ग) फिर भी, यह सब से बड़ी बात नहीं है; सब से बड़ी बात, आनंद करने का सही कारण, हमारे नाम स्वर्ग में लिखे होना, परमेश्वर का हमें जानना और हमारा उसकी संतान बन जाना है। यह सब से बड़ी बात है।

2. यीशु ने, मत्ती 7:22-23 में अपने शिष्यों से कहा कि बहुतेरे स्वर्ग से दूर कर दिये जायेंगे।

(क) क्षण भर के लिए सिर्फ कल्पना कीजिए कि *सर्वज्ञानी परमेश्वर* हमें न जाने या *सर्वव्यापी सृष्टिकर्ता* की उपस्थिति से हम बाहर रहें इसका अर्थ क्या है। अनंतकाल तक इस दशा में रहने की तुलना में नरक की ज्वालाएं भी फिकी पड़ सकती हैं। कितना भयंकर अकेलापन! यह कल्पना मुझे दहला देती है।

(ख) परमेश्वर के द्वारा जाने जाना इसका सही-सही अर्थ क्या है? मत्ती के उसी अध्याय में यीशु समझाता है कि स्वर्ग के राज्य में मात्र वे ही लोग प्रवेश करेंगे जो परमेश्वर पिता की इच्छा पर चलते हैं। "स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना" को दूसरे शब्दों में "परमेश्वर के द्वारा जाने या पहचाने जाना" कहते हैं और इसी का अर्थ हमारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुये होना होता है।

(ग) यदि आपने स्वयं को परमेश्वर के लिए समर्पित कर दिया है और अपना जीवन उसे दे दिया है तो आपने उस सब से बड़ी बात को कर लिया है जो आप कर सकते हैं। अब क्या? अब दूसरी सब से बड़ी बात यह है कि परमेश्वर के बारे में औरों को बताएं - और महान आदेश यही सब-कुछ है।

3. **यीशु ने अपने पुनःरुत्थान की संध्या, कलीसिया के लिए अपनी इच्छा को प्रकट किया। उसने जो कहा था वह सुसमाचारों में लिखा हुआ है। "जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।" यूहन्ना 20:21)**

(क) "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" मरकुस 16:15

(ख) "सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा।" लूका 24:47

(ग) यह परमेश्वर की आज्ञा है। परमेश्वर के सारे लोगों को, तथा संसार में मसीह की देह का प्रतिनिधित्व करनेवाली सारी कलीसियाओं को, आदेश दिया गया है कि सारी जातियों में, अर्थात् सारे जातीय-समूहों में, मसीह यीशु का सारा सुसमाचार लेकर पहुंचे। यीशु ने हमें बताया है कि, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा ताकि सब जातियों पर गवाही हो, और तब अन्त आ जाएगा।" मत्ती 24:14

पाठ 8

उसके आगमन के दिन को शीघ्र लाना

- स्टीफन लीवरसेज

प्रस्तावना: प्रेरित पतरस, अपनी दो पत्रियों में, सारे विश्वासियों के लिये, उस उद्देश्य के संबंध में प्रोत्साहन के अनेक शब्द लिखता है, जिसके लिये परमेश्वर ने हमें इस पृथ्वी पर रखा है।

1. **पतरस घोषणा करता है कि हम एक चुना हुआ वंश है। 1 पतरस 2:9**

   (क) मैं विश्वास करता हूँ कि यह प्रत्येक पीढ़ी के लिये सच होगा, परंतु विशेष कर आज की वर्तमान पीढ़ी के लिये, क्योंकि मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि यही पीढ़ी महान् आदेश को पूरा होते हुए देखेगी।

   (ख) हम राज पदधारी याजक हैं। पुराने नियम में परमेश्वर के सम्मुख लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिये और परमेश्वर और लोगों के बीच में मध्यस्थता करने के लिये याजकों की आवश्यकता होती थी। परन्तु अब यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा, हम, बिना किसी याजक पर निर्भर रहते हुये, सीधे पिता परमेश्वर के पास जा सकते हैं।

   (ग) हमें एक पवित्र प्रजा बनना है, ऐसे लोग जो अलग किए हुए हैं और पूर्णत: परमेश्वर के हैं। अवश्य है कि हम, इस संसार की पाप से भरी परीक्षाओं पर जय पाते हुए, पवित्र जीवन व्यतीत करें।

   (घ) हम, इस चुनी हुई पीढ़ी में के होने के नाते, अपने जीवनों से कौन सी सब से बड़ी बात कर सकते हैं? वह चाहे जो भी हो, मैं जानता हूं कि उसका कुछ-न-कुछ संबंध मसीह के महान आदेश से होगा कि उसके द्वारा प्राप्त होने वाले उद्धार का सुसमाचार पृथ्वी की छोर तक पहुंचाया जाये।

2. **पतरस ने हमें प्रोत्साहित किया है कि यीशु मसीह के पुन: आगमन के दिन को शीघ्र लाने के लिये हम पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत करें। 1 पतरस 3:11**

   (क) इन पदों से स्पष्ट है कि हम में से प्रत्येक जन, महान् आदेश को पूरा करने

हेतु काम करने के लिये बुलाया गया है - वास्तव में यह यीशु के आगमन के दिन को शीघ्रता से निकट लाने के लिए है, अर्थात उस दिन को जब वह अपनी सृष्टि को छुड़ाने के लिए और हमें स्वर्ग में अपनी अनंत उपस्थिति में ले जाने के लिये आयेगा।

(ख) पतरस ने हमें प्रोत्साहित किया है कि हम पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत करने के द्वारा और सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा मसीह के आगमन को शीघ्र निकट ले आयें।

(ग) पवित्र और धर्मी जीवन के बिना सुसमाचार-प्रचार की सेवा खोखली और फलहीन है। परंतु मात्र पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत करना भी स्वयं में पर्याप्त नहीं है। हमें दोनों कार्य करना है, जिससे हम मसीह के आगमन को शीघ्र निकट लाते हैं।

3. **पतरस ने हमें प्रोत्साहित किया है कि हम सदैव उत्तर देने के लिये तैयार रहें। 1 पतरस 3:15**

(क) प्रेरित पतरस ने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया है कि ऐसे हर एक अवसर के लिये तैयार रहें कि परमेश्वर की ओर से, मसीह यीशु की क्रूस पर की मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा दिये जाने वाले उद्धार के मुफ्त उपहार के विषय में साफ-साफ स्पष्टीकरण दे सकें।

(ख) यह पाठ्यक्रम आपकी सहायता हेतु तैयार किया गया है जिससे आप स्वयं के अपने विश्वास के विषय में पूछे जाने पर स्पष्ट और प्रभावशाली उत्तर देने के लिए तैयार हो जाओ।

(ग) परंतु यह स्मरण रखिये कि इसके साथ ही यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि आप आत्मिक रूप से तैयार रहें - कि हमारा हृदय परमेश्वर के अलौकिक प्रेम और अनुग्रह के साथ, प्रत्येक अवसर में उत्तर देने के लिए तैयार रहेगा।

उपसंहार: मैं आपसे याचना करता हूं कि जो कुछ मसीह आपसे करने कहता है, उसे कीजिए।

- उसे खोए हुओं के लिए कीजिए।
- उसे अपने आनंद के लिए कीजिए।
- और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए कीजिए!

पाठ 9

गवाह बनने हेतु कुछ व्यावहारिक मार्गदर्शन

प्रस्तावना: राजा के लिए एक फलदायी सुसमाचार प्रचारक बनने की चाहत रखना एक बात है; सचमुच एक फलदायी गवाह बनना यह बिल्कुल अलग बात है।

1. फलदाई गवाह बनने हेतु कुछ बुनियादी मार्गदर्शन:

(क) यीशु को आपने कैसे पाया और उस पर विश्वास करने से आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया इसे साधारण कहानी के रूप में बतायें।

(ख) अपनी प्रार्थनाओं के मिले उत्तरों को बतायें। - भजन 50: 15

(ग) मसीह आपको किस प्रकार सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करता है इसके बारे में बतायें। - भजन संहिता 107: 8-9

(घ) पाप और परीक्षाओं पर पाई गई व्यक्तिगत विजय के विषय में बतायें। - 1 यूहन्ना 5: 4-5

(ङ) अपने मन-पसन्द बाइबल पदों के विषय में बताइए और यह कि किस प्रकार हाल ही में पवित्र-शास्त्र के विशिष्ट हिस्से के द्वारा परमेश्वर ने आपसे बातचीत की है।

(च) यीशु मसीह पर केंद्रित रहिये। उन्हें उसके बारे में बतायें।

2. कुछ रुकावटें जो किसी-किसी को लोगों के सामने मसीह का अंगीकार करने से रोकती हैं:

(क) कुछ भयभीत हो जाते हैं। 2 तिथियुस 1:7

(ख) कुछ लज्जा महसूस करते हैं। रोमियो 1:16

(ग) कुछ अशुद्ध जीवन जीते हैं। 1यूहन्ना 1:9

3. जब आप व्यक्तिगत् सुसमाचार प्रचार करते हैं तब निम्नलिखित बातों का पालन करें:

(क) दूसरों को सुसमाचार देने से पहले, चाहे आप पैदल चल रहे हों या यात्रा कर रहे हों, प्रार्थना अवश्य करें। किन लोगों के बीच में जाना है, और कैसे जाना है इसके लिये परमेश्वर की अगुवाई मांगने हेतु प्रार्थना करें। जब आप गवाही देने का प्रयास कर रहे हैं तब दूसरे विश्वासियों को प्रार्थना करने

कहें।

(ख) जिनके मध्य जाकर आप सेवा करने पर है, उनकी आस्थाओं और रीति रिवाजों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

(ग) उनके साथ अच्छे संबंध स्थापित करें।

(घ) अपने जीवन की कहानी उन्हें बताएं - कैसे परमेश्वर ने आपको पाप के बंधन से मुक्त किया और आपके जीवन को परिवर्तित कर दिया। भजन 50:15

(ङ) उन्हें यह बात बहुत ही साफ रीति से बताएं कि वे परमेश्वर की संतान कैसे बन सकते हैं।

(छ) जब आप को लगे कि वे स्वेच्छा से तैयार हैं, तब उन्हें यह अवसर प्रदान करें कि वे यीशु मसीह को अपने हृदय में बुलाने की प्रार्थना करें।

(ज) जो इस प्रार्थना को करते हैं, उनके साथ एक दो दिन के बाद मिलने का समय निश्चित करें।

4. व्यक्तिगत् सुसमाचार-प्रचार के दौरान निम्नलिखित से सावधान रहें:

(क) परमेश्वर के शुभ संदेश की चर्चा करने में चूक ना जाएं। यहेजकेल 33:8

(ख) उद्धार के लिये मन को तैयार करने का काम पवित्र आत्मा करता है: 1 कुरिन्थ 3:6-9

- इसलिए लोगों से वाद-विवाद न करें।

- एक बार में एकाएक बहुत अधिक जानकारी न लाद दें; बल्कि पवित्र आत्मा को उनके मनों में कार्य करने का अवसर दें।

(ग) किसी व्यक्ति, संस्कृति या धर्म का अपमान न करें। मत्ती 5:22

(घ) समय से पहले किसी पर निर्णय लेने हेतु दबाव न डालें। सभोपदेशक 3:12

पाठ 10

एक धार्मिक गवाह की विशेषताएं

प्रस्तावना- प्रत्येक विश्वासी एक गवाह है! (यह दु:ख की बात है कि कुछ जो अपने आप को मसीही कहते हैं, पाप में जीवन व्यतीत करते हैं और वास्तव में परमेश्वर और कलीसिया के लिये बुरे गवाह ठहरते हैं।) एक अच्छे और धार्मिक गवाह की क्या-क्या विशेषताएं होती है?

1. एक विश्वासी परमेश्वर के राज्य के लिए एक अच्छा और धार्मिक गवाह होगा यदि वह:

   (क) परमेश्वर का गवाह होने के लिये मिली बुलाहट को पहचानता है और स्वीकार करता है। - यशायाह 6:3-9; लूका 24:45-49

   (ख) पवित्र किया गया है (परमेश्वर के लिए अलग किया गया है)। - यूहन्ना 17:17-19; 1 कुरिन्थियों 1:1-2

   (ग) परमेश्वर के पवित्र आत्मा से भरा हुआ है। - इफिसियों 5:18

   (घ) अपने प्रतिदिन के जीवन में पवित्र आत्मा के फल को प्रकट करता है। - गलातियों 5:22-23

   (ङ) प्रार्थना करने वाला जन है। - इफिसियों 6:18

   (च) एक ऐसा जन है जिसके हृदय में परमेश्वर का वचन पाया जाता है। - भजन 119:11

   (छ) जो मसीह के प्रति पूरी तरह से समर्पित है। - फिलिप्पियों 3:7-14

   (ज) अन्य विश्वासियों के साथ मधुर संबंध उवं एकता बनाये रखता है। - यूहन्ना 17:20-23

   (झ) एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के निकट आने में विश्वासयोग्य है। - इब्रानियों 10:22-24

   (ञ) खोए हुओं के प्रति गहरा और सच्चा प्रेम रखता है। - कुरिन्थ 9:19

   (ट) इस पापी संसार की लालसाओं से भरी परीक्षाओं से भागता है। - 1 तीमुथियुस 6:11-12

   (ठ) नम्र और सिखाने योग्य है। - फिलिप्पियों 2:3-5; 2 तीमुथियुस 2:15

(ड) एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के राज्य के लिए बलिदान करने हेतु इच्छुक है, और इस संसार के समान नहीं चलता परन्तु एक परिवर्तित जीवन व्यतीत करता है। रोमियों 12:1-2

2. लूका 2:52 में हम पढ़ते हैं कि "यीशु बुद्धि और डील डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।" इसी प्रकार, परमेश्वर के राज्य के एक अच्छे और धार्मिक गवाह बनने के लिए, हमें ठीक वैसे ही बढ़ना है जैसे यीशु बढ़ता गया । लूका 2:52

(क) जैसे यीशु बुद्धि में बढ़ता गया, हमें परमेश्वर से वैसी ही बुद्धि मांगनी चाहिये और जीवन भर उसके वचन के विद्यार्थी बने रहना चाहिये। याकूब 1:5-6; मत्ती 11:29

(ख) जैसे यीशु शरीर में बढ़ता गया, हमें भी स्वस्थ्य खान-पान, पर्याप्त नींद, समय-समय पर व्यायाम और अच्छी आदतों की देखरेख करते हुये अपने शरीर की देखभाल करनी चाहिये। 1 कुरिन्थियों 6:19-20; 1 तीमुथियुस 4:7-8

(ग) जैसे यीशु परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़ता गया, हमें भी उसके अनुग्रह में बढ़ने का भरसक प्रयत्न करते रहना चाहिये। फिलिप्पियों 3:12-14

(घ) जैसे यीशु मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ता गया, हमें भी मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ने का प्रयास करना चाहिये, ताकि हम हमारे द्वारा सुनाये जाने वाले आशा एवं परमेश्वर के उद्धार के शुभ संदेश को सुनने के लिये लोगों का ध्यान पा सकें। मत्ती 5:16; 1 पतरस 2:12

3. **हमारी गवाही को तब बल मिलता है जब हम निम्नलिखित आत्मिक अनुशासन का पालन करते हैं :**

(क) प्रतिदिन वचन में समय बिताना भजन119:9-11, 105; कुल 4:16

(ख) परमेश्वर के वचनों को याद करना भजन 119:11

(ग) नियमित प्रार्थना के जीवन को बनाए रखना लूका 11:1-4; 1 थिस. 5:16-18

(घ) आराधना करना मत्ती 6:16-18; 17:20-21

(ङ) उपवास करना मत्ती 6:16-18; 17:20-21

(च) सेवा करना गलातियों 5:13; 1 पतरस 4:10

(छ) दशवांश देना मलाकी 3:10; 2 कुरिन्थियों 9:7

(ज) गवाही देना प्रेरित 1:8

पाठ 11

व्यक्तिगत सुसमाचार-प्रचार के लिये सात कदम

सात सरल कदम हैं, जो दूसरों को यीशु के शुभ संदेश का परिचय देने की, तथा उन्हें आत्मिक परिपक्वता की ओर भी अगुवाई करने की प्रक्रिया की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं:

1. **उनके बारे में जानना:** आप जिनके मध्य जाने की आशा करते हैं, उनकी आस्थाओं तथा सर्वसामान्य आत्मिक स्थिति का अवलोकन तथा सर्वेक्षण करें। उस सब जानकारी को एकत्रित करें जो उस समय उपलब्ध है, जो आपको यह समझने में सहायता करेगी कि आप उनके समक्ष सुसमाचार को किस उत्तम तरीके से प्रस्तुत करें कि वे उसे समझ सकेंगे।
2. **उनके लिए प्रार्थना करना:** कभी न भूलें की विश्वासमय, उत्तेजना से की गई प्रार्थना इस प्रक्रिया के प्रत्येक कदम के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।
3. **उनके साथ संबंध स्थापित करना:** आप जिन लोगों तक पहुंचने का प्रयास कर रहें हैं, उनसे अच्छे व मधुर संबंध स्थापित करें। (इनमें महिने या कुछ क्षण भी लग सकते हैं, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित किये जाने से)। आपके हृदय में भरे परमेश्वर के प्रेम को अपने स्नेहपूर्ण कार्यों को और सेवाओं के द्वारा उस समुदाय के लोगों पर प्रकट करें।
4. **उन्हें निमंत्रित करना:** अपनी कहानी को बतायें--कैसे यीशु ने आपको छुटकारा और एक नया जीवन दिया-- और उस बड़े संदेश को स्पष्ट करें कि कैसे यीशु उन्हें भी छुटकारा दे सकता है। उन्हें परमेश्वर की क्षमा और उसके अनंत जीवन को ग्रहण करने हेतु प्रार्थना करने का अवसर प्रदान करें। रोमियों 10:9
5. **उन्हें तैयार करना:** नये विश्वासियों के साथ लगातार मिलते रहें, क्योंकि वे निर्बल मेम्ने हैं, और अवश्य है कि विश्वासयोग्यता से उन्हें शिक्षा दें और प्रोत्साहित करें। उन्हें परमेश्वर के वचन का 'आत्मिक दूध' देते रहें,

और उन्हें सिखाएं कि मसीह में कैसे चलना और बढ़ना है। निश्चित करें कि वे प्रतिदिन वचन पढ़ने में समय देते हैं, यदि वे अनपढ़ है तो निश्चित करें कि उन्हें किसी न किसी माध्यम से प्रतिदिन आत्मिक पोषण और प्रोत्साहन दिया जा रहा है। 1 कुरिन्थियों 3:2

तैयार किये जाने और शिष्यता की इस प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम बपतिस्मा है। नये विश्वासियों प्रोत्साहित करें कि वे पानी के बपतिस्में के द्वारा "इस संसार की बातों के प्रति मर जाने, गाड़े जाने और मसीह में पुन: जीवित होने" की गवाही सार्वजनिक रूप से दें। मरकुस16:16; रोमियों 6:3-4

6. **उन्हें जोड़ना :** नये विश्वासियों को मसीह के अन्य शिष्यों के साथ जोड़ें। उनकी सहायता करें कि वे अन्य मसीहियों के साथ आराधना करने और प्रार्थना और बाइबिल अध्ययन करने में विश्वसनीय ढंग से एक ऐसे समूह में सहभागी हों जो सप्ताह में कम से कम एक बार मिलता ही है। एक दूसरा सहायक उपाय है उन्हें किसी "बड़े भाई" या "बड़ी बहन" से जोड़ दें (भाई को भाई के साथ और बहन को बहन के साथ) जो नए विश्वासी के साथ सप्ताह में जितना अधिक हो सके, एक से अधिक बार सम्पर्क कर सकें। परिपक्व विश्वासी नये विश्वासी को प्रोत्साहित कर सकता है, और वे एक साथ परमेश्वर का वचन पढ़ सकते हैं और प्रार्थना कर सकते हैं।

7. **उनकी अगुवाई करना:** नए विश्वासियों की सहायता करे कि वे अपनी गवाही बताना सीखें -- परमेश्वर ने कैसे उन्हें छुटकारा और नया जीवन दिया-- और यह सीखने में भी उनकी सहायता करें कि वे दूसरों को परमेश्वर के पास कैसे ला सकते हैं और अपने मित्रों को परमेश्वर की क्षमा और अनंत जीवन को ग्रहण करने का अवसर कैसे दे सकते हैं।

पाठ 12

खोए हुओं के लिए प्रभावकारी रूप से प्रार्थना करना,

खोए हुओं के लिये प्रार्थना करने के बाइबल के नमूने :

1. यीशु ने उनके लिए प्रार्थना की जिन्हें उसने भेजा था, और उनके लिए जो उनके वचनों पर विश्वास करेगें। यूहन्ना 17:18,20
2. पौलुस ने इस्राएलियों के लिए प्रार्थना की कि "वे उद्धार पाएं" रोमियों 10:1,2
3. पौलुस हमें तीमुथियुस को लिखे पहले पत्र में बताता है कि परमेश्वर चाहता है कि सब उद्धार पाएं, अत: जब हम प्रार्थना करते हैं कि उद्धार न पाये हुये लोग उद्धार पाएं तो हम जानते हैं कि हम उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना कर रहे हैं। 1 तीमुथियुस 2:3,4

खोए हुओं के लिए प्रार्थना करने के दस तरीके, ताकि वे मसीह के पास आयें:

1. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उनकी आत्मिक आंखों को खोले। 2 कुरिंथि 4:4
2. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि उन्हें सुनने के लिए कान दे। मत्ती 13:15
3. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि उन्हें विश्वास दे। इफिसियों 2:8-9
4. परमेश्वर से प्रार्थना करे कि उन्हें अंगीकार करने की इच्छा दे। रोमियों 10:9
5. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि उनके जीवन में ऐसे लोग भेजे जो उन्हें सुसमाचार सुनाएंगे। मत्ती 9:38
6. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपके लिये उनके साथ स्नेहपूर्ण संबंध बनाने के रास्तें प्राप्त हों। 1 कुरिंथि 9:22
7. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए आपको अवसर प्रदान करे। कुलुस्सियों 4:3

8. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए आपको साहस दे। प्रेरितों 4:29
9. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपको उन्हें मसीह को स्वीकार करने का निमंत्रण देने का अवसर मिले। लूका 14:23
10. परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उन्हें आत्मिक कैद से छुटकारा दे। 2 तीमुथियुस 2:25-26)

प्रत्येक विश्वासी को अपने पास नामों की एक सूची रखना चाहिये, जिनके लिए वह प्रतिदिन प्रार्थना किया करे कि वे मसीह और उसके उद्धार को प्राप्त करेंगे।

1. सूची में कम से कम तीन नाम हों, परन्तु और भी जोड़े जा सकते हैं।
2. नामों को एक पेज पर लिखकर बाइबिल में रख लें, या ऐसी जगह जहां वह आपको प्रार्थना हेतु स्मरण दिलायेगी।
3. प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपको अवसर प्रदान करे कि आपकी नाम की सूची में लिखे हुये लोगों को आप सुसमाचार सुना सकें। 1 पतरस 3:15
4. जैसे ही उनमें से कोई अपना हृदय मसीह को देते हैं, उनका नाम वहां से हटा दें और उनके स्थान पर दूसरे नये नाम जोड़ लें।

प्रार्थना में सहमत होना:

1. प्रारंभिक कलीसिया "एक मन होकर प्रार्थना करने और निवेदन करने में लवलीन थी," और हजारों ने उद्धार को पाया। प्रेरित 1:14
2. यीशु ने सिखाया है कि यदि प्रार्थना में दो जन सहमत हों, तो वह उनके लिए हो जाएगा। मत्ती 18:19,20
3. प्रार्थना में अलौकिक सामर्थ पायी जाती है, और एक मन होकर की गई प्रार्थना में और भी अधिक सामर्थ पायी जाती है।
4. अन्य विश्वासियों के साथ मिलकर प्रार्थना करने की आदत बना लें-- या तो प्रार्थना साथी के साथ, या कोई प्रार्थना समूह के साथ, तीन-तीन के झुण्ड़ में या फिर किसी भी अन्य समूह में, प्रार्थना करें।

प्रार्थना से संबंधित बाइबिल की कुछ अन्य शिक्षाएं :

1. धन्यवाद देते हुए प्रार्थना करना है। फिलिप्पियों 4:6
2. विश्वास के साथ प्रार्थना करना है। मरकुस 11:24

3. निरंतर प्रार्थना करना है। 1 थिस्सलुनिकियों 5:17
4. यीशु के सामर्थी नाम में प्रार्थना करना है। 1 यूहन्ना 5:14,15
5. विनम्र, धर्मी हृदय से प्रार्थना करना है। याकूब 5:16

पाठ 13

अपनी गवाही बताना

प्रस्तावना: श्रीलंका के एक अगुवे, रेव्ह डी. टी. नाइल्स, अपने कथन को लेकर बहुत प्रसिद्ध हैं, "सुसमाचार-प्रचार यूंही है कि एक भिखारी दूसरे भिखारी को, रोटी की खोज कहां करे बता रहा हो।"

- कहानी सुनना हर कोई पसन्द करता है। और यह बहुत ही स्वाभाविक बात है कि हम अपने मित्रों और परिवार को बतायें कि हमें आत्मिक रोटी कहां से और कैसे मिली है।
- जब हम दूसरों से उस प्रेम के बारे में बताते हैं जो हमें परमेश्वर से है, और इसके बारे में कि उसने हमारे जीवन को कैसे बदल दिया है, तब हमें तर्क-वितर्क करने की आवश्यकता नही होती; हम बस अपनी कहानी बता रहे होते है।
- एक भिखारी के समान जो भूखा था, हम आत्मिक रूप से भूखे थे, और अपनी आत्मा का समाधान हमें यीशु मसीह में मिला है।

गवाही देने के सब से अधिक प्रभावकारी साधनों में एक है आपकी अपनी गवाही -- मसीह के साथ के आपके संबंध के बारे में -- उसने कैसे आपको छुड़ाया है और आपके जीवन को बदल दिया है।

1. अंधे ने चंगाई पाने के बाद धर्मगुरूओं को गवाही दी थी, "मैं एक बात जानता हूं, मैं अंधा था और अब देखता हूं।" यूहन्ना 9:25 ख
2. कुछ लोग, सिद्धांतों और विचारों पर तर्क करने की मनसा से, पवित्रशास्त्र पर आपत्ति कर सकते है, परन्तु मसीह के द्वारा परिवर्तित जीवन की गवाही को तर्क से असत्य ठहराया नहीं जा सकता।

जब आप अपनी गवाही बता रहे हैं तो उसमें निम्नलिखित तीन भाग सम्मिलित होने चाहिये:-

1. सब से पहले इसका वर्णन करें कि मसीही बनने के पहले आपका जीवन किस प्रकार का था।

   (क) क्या परमेश्वर ने आपको किसी शारीरिक दुर्बलता या किसी

बुरी आदत के बंधन से छुटकारा दिया है?

(ख) क्या आपका जीवन अन्दर से खालीपन और आशाहीनता की भावनाओं से भरा था? जैसे कि, आम तौर पर ये दोनों बातें अविश्वासियों के जीवन में होती ही हैं।

(ग) सुनिश्चित कर लें कि किसी विशेष प्रकार के पाप पर आप बहुत अधिक जोर नहीं देंगें, ताकि ऐसा ना हो जाये कि पाप भरे जीवन की ही बड़ाई कर रहे हो।

2. यीशु के बारे में आपने कब और कहाँ सुना, और आपने उसे अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करने का निर्णय क्यों लिया इसका वर्णन करें।

(क) आपके हृदय और मन में जो दृढ़ विश्वास आया था, उसकी चर्चा करें।

(ख) जब आप बात कर रहें हैं तब मन में प्रार्थना भी करते रहें कि पवित्र आत्मा सुनने वाले के जीवन में काम करे, परमेश्वर के अनुग्रह और क्षमा को ग्रहण करने हेतु उसे पश्चातापी और स्वीकार करने वाली आत्मा से भरे।

3. मसीह बनने के बाद से आपका जीवन कैसे बदल गया यह बतायें।

(क) स्वर्ग के राज्य के नागरिक हो जाने के कारण जो आनंद और शांति आपको मिली है उसका वर्णन करें।

(ख) परमेश्वर ने आपके जीवन को किस प्रकार से परिवर्तित किया है उन बातों को विशेष करके बतायें।

जब आप अपनी गवाही बताते है तब उनसे उनका प्रत्युत्तर पूछने के लिये तैयार रहें।

1. जब आप अपनी कहानी सुनाते हैं, प्रार्थना में लगे रहें। परमेश्वर से मात्र यही ना मांगे कि उस व्यक्ति से बात करे , परंतु यह भी मांगे कि वह आपकी भी अगुवाई करे कि आप किस प्रकार अपनी बातों को कहें।
2. जबकि आप अपनी कहानी सुना रहे होते हैं, समय-समय पर प्रश्न भी करते रहें कि आप को ज्ञात हो कि वह आपकी बात समझ रहा है कि नहीं। उदाहरण के लिए :

- " क्या इस बात का आपके लिये कोई अर्थ निकलता है?"
- " क्या आप इस बात से सहमत होंगे कि ख़ख़ ?"

3. तैयार रहें, जब आप परमेश्वर की अगुवाई को महसूस करते हैं, तब उस व्यक्ति को पूछें की क्या वह यीशु को अपने हृदय में स्वीकार करना चाहेगा।

पाठ 14

अनंतकालिक परिणाम उत्पन्न करने वाले वार्तालाप

नीचे उन सम्भावित प्रश्नों की सूची है जो वार्तालाप को मसीह और उसके उद्धार की ओर मोड़ने के लिए सहायक हो सकते हैं।

1. यदि आज रात आप की मृत्यु हो, क्या आप निश्चित है कि आप स्वर्ग जाएंगे? क्या किसी ने कभी समझाया कि आप कैसे सुनिश्चित रीति से इसे जान सकते हैं?
2. लोग अपने पेशे, अपने शरीर और आपसी रिश्तों को विकसित करने में अपना समय और शक्ति लगा देते हैं, परन्तु प्राय: अपने जीवन के आत्मिक क्षेत्रों की ओर ध्यान नहीं देते। आप किस रीति से आत्मिक उन्नति की सक्रियता से खोज करते हैं?
3. क्या आपका मन आत्मिक बातों में अधिकता से हैं? (यह प्रश्न बहुधा "आत्मिक" क्या है के वार्तालाप की ओर ले जाता है-- जैसे कि धर्म की तुलना में नाते-संबंध)।
4. हम कुछ समय से मित्र है, परंतु मैंने कभी आपसे अपने जीवन के सब से महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा ही नहीं की। क्या मैं आपका कुछ समय ले सकता हूँ, उसे बताने के लिये?
5. इस अनुभव ने परमेश्वर के प्रति आपके दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित किया है?
6. हमें कभी ऐसा अवसर ही नहीं मिला कि आपकी धार्मिक पृष्ठभूमि के बारे में बात करें। आप क्या कहेंगे कि आप अपनी आध्यात्मिक यात्रा में कहाँ तक पहुंचे हैं?
7. मैं आपको बताना चाहूँगा कि मैंने परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत् संबंध को कैसे पाया।
8. परमेश्वर के बारे में आपका विचार क्या है? आप उसके प्रति सकारात्मक विचार रखते हैं या नकारात्मक?

9. क्या आप अपने जीवन में कभी ऐसी स्थिति में आये हो जब आपने यीशु मसीह में, अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में, विश्वास किया? या क्या आप सोचते है कि अभी भी आप उस ओर बढ़ ही रहे हैं? क्या मैं आप को बताऊं कि मैं उस स्थिति तक कैसे पहुंचा?
10. क्या आपको लगता है कि विश्वास एवं आत्मिक मूल्यों कि आपके (कार्य) (दिनचर्या) (विवाह) (जीवन का दृष्टिकोण) में कुछ भूमिका है?
11. यदि आप निश्चय हो सकते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है तो क्या आप उसे जानना चाहेंगे? या यदि आप व्यक्तिगत् रूप से परमेश्वर को जान सकते हैं तो क्या आप उसे जानना चाहेगें?
12. आप क्या सोचते हैं, कोई व्यक्ति मसीही कैसे बन जाता है?
13. क्या मैं उस एक बात के बारे में बता सकता हूं जो मुझे एक (पिता, पालक, इत्यादि) होने के नाते सब से अधिक महत्वपूर्ण जान पड़ी?
14. जब आप रात में सोने जाते हैं, मन में क्या विचार आता है?
15. अधिकांश लोग कहते हैं कि वे परमेश्वर में विश्वास करते है। आपके लिये परमेश्वर में विश्वास करने का अर्थ क्या है ?
16. व्यक्तिगत् रूप से मसीह को जानने से पहले, परमेश्वर के प्रति मेरी धारण अस्पष्ट थी कि मैं अपने आप को उससे जोड़ नहीं सकता था, उसे समझ नहीं सकता था। आप परमेश्वर के प्रति अपनी धारणा को कैसे व्यक्त करेंगे? यीशु के विषय में आपके क्या विचार हैं? क्या आपके लिये वह एक सच्चाई है या अस्पष्ट धारणा है?
17. क्या आप आने वाले रविवार को मेरे साथ कलीसिया में आराधना करने आना चाहेगें?
18. मुझे यह बात पसंद नहीं आयेगी कि आप मेरी कलीसिया में आये और वहाँ क्या होता है यह आप समझ ना पायें। क्या आप चाहेंगे कि हम साथ बैठकर अपने बुनियादी आस्थाओं पर चर्चा करें?
19. क्या कलीसिया ऐसा स्थान है जिसने आपके जीवन पर कुछ प्रभाव किया हो? क्या अब आप चाहते हो कि कलीसिया आपके जीवन में एक बड़ा हिस्सा बन जाये? किस बात ने आपके मन को ऐसा बनाया? क्या आप हमारी बुनियादी बातों को सुनना चाहेंगे कि ताकि आप जान सकें कि ये वे बातें हैं या नहीं जिन्हें आप खोज रहे थे?

20. किसी मित्र से, जो आपकी कलीसिया या आपके किसी मसीही कार्यक्रम में आ चुका है, पूछने हेतु सुझाये गये प्रश्न:

(क) इस के बारे में आपने क्या सोचा?

(ख) क्या आपको इसका कुछ अर्थ समझ में आया?

(ग) क्या आपने व्यक्तिगत् रूप से परमेश्वर को जानने की अद्‌भुत खोज कर ली?

(घ) यदि आपने इसके पहले कभी यीशु से अपने पापों की क्षमा नहीं मांगी हो, और उसे अपने हृदय में आमंत्रित दिया किया हो तो क्या आप अभी ऐसा करना चाहेंगे?

पाठ 15

पश्चाताप हेतु लोगों को आह्वान देना:

प्रस्तावना: पश्चताप, अर्थात् मन और हृदय दोनों का सचमुच में स्वयं से हटकर परमेश्वर की ओर मुड़ जाना, उद्धार का एक अनिवार्य भाग है। जब हम लोगों का परिचय सर्वशक्तिमान परमेश्वर से करा रहे हैं तो हमें इस महत्वपूर्ण आवश्यकता को भूलना नहीं चाहिये।

सरलता से कहा जाये तो बाइबल में कहे गये पश्चाताप का अर्थ किसी के मन का परिवर्तित होना है।

1. यह किसी से दूर हो जाना है -- पूरा पलट जाना
2. यह प्राय: आस्था में आने वाला परिवर्तन है; जैसे कि, पेन्तेकुस्त के दिन पतरस ने यहूदियों को पश्चाताप करने का अर्थात् जिन्होंने मसीह पर विश्वास नहीं किया था उन्हें यीशु कौन था के विषय में अपने मनों को परिवर्तित करने का प्रोत्साहन दिया था।
3. अन्य उदाहरणों में, यह प्राय: पाप की अधिनता के जीवन से फिरकर परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के जीवन की ओर मुड़ जाना होता है।

परमेश्वर अपने वचन में, बार-बार लोगों को पश्चताप् करने के लिये बुलाता है।

1. "पश्चताप करना" और "पश्चताप" बाइबिल में लगभग 75 बार आया है।
2. पुराने नियम में परमेश्वर बार-बार अपने लोगों को पश्चताप करने के लिए कहता है। 1 राजा 8:47; यहेजकेल 18:30
3. यीशु ने भी लोगों को पश्चताप करने का उपदेश दिया। मत्ती 4:47; मरकुस 1:15; लूका 13:3
4. प्रेरितों ने पश्चताप का प्रचार किया। प्रेरितों 3:19; प्रेरितों 17:30; प्रेरितों 26:20

पश्चताप और विश्वास को एक ही सच्चाई के दो एक दूसरे को पूरा करने वाले पहलू, या एक ही सिक्के की दो बाजू, **समझा जा सकता है,**

1. मसीह यीशु में अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास असंभव है बिना इसके

कि पहले वह कौन है और के उसने क्या किया है इसके प्रति अपना मन बदले।

2. वह चाहे जानबूझकर मसीह को अस्वीकार किये जाने से मन फिराता हो, या उसके प्रति जो अज्ञानता अथवा अनिच्छा थी उससे मन फिराना हो, वह मन का परिवर्तन ही है।
3. बाइबल में कहा गया पश्चताप, जो उद्धार से संबंधित है, वह अपना मन मसीह का इन्कार करने की ओर से फिरा कर मसीह में विश्वास करने की ओर लाना है।

जब लोग अपने पापों से पश्चताप करते हैं, परमेश्वर क्षमा कर देता है।

1. परमेश्वर चाहता है कि हम अपने पापमय मार्गों से पश्चाताप करें, उन से दूर हो जायें। लूका 15:7
2. परमेश्वर ने राजा दाऊद को क्षमा किया, जब उसने बतशेबा को अपनी पत्नी बनाने के और उसके पति को मरवा डालने के पाप से पश्चताप किया। 2 शमुएल 12:13
3. परमेश्वर धीरज धरता है, चाहता है कि प्रत्येक जन पश्चताप करे। 2 पतरस 3:9

चर्चा: विद्यार्थियों को भजन संहिता 51 पढ़ने कहें और निम्नलिखित बातों पर चर्चा करें।

1. भजन संहिता 51 को किसने लिखा? (राजा दाऊद ने)
2. दाऊद क्यों परमेश्वर की करूणा के लिए गिड़गिड़ा रहा था? (उसने बतशेबा को अपनी पत्नी बनाने और उसके पति को मरवा डालने का पाप किया था।)
3. राजा दाऊद ने व्यभिचार और हत्या का पाप किया था। क्या परमेश्वर ने उसका पाप क्षमा किया? (हां)
4. परमेश्वर ने उसे क्यों क्षमा कर दिया? (क्योंकि दाऊद ने पश्चताप किया था।)
5. परमेश्वर क्यों चाहता है कि हम पाप से फिरें और पवित्र एवं धर्मी जीवन व्यतीत करें? (वह चाहता है कि उसकी संतान पवित्र और धर्मी हों क्योंकि वह पवित्र और धर्मी है। वह पाप से घृणा करता है। वह हमें अपना पवित्र आत्मा देता है कि हम पवित्र जीवन व्यतीत कर सकें।)

पाठ 16

प्रभाव के क्षेत्र

प्रस्तावना: जब हम सोचते हैं और प्रार्थना करते हैं कि मसीह यीशु में प्राप्त उद्धार के सुसमाचार को लेकर हम किस के पास जाने का प्रयास करेंगे तो हमें पांच संबंधपरक क्षेत्र और चार भौगोलिक क्षेत्र के संबंध में विचार करना चाहिये।

हम पांच प्रकार के संबंधपरक क्षेत्रों में रहते हैं, और अवश्य है कि हम उन लोगों के समक्ष गवाही दें जो इन पांच विभिन्न क्षेत्रों में किसी में भी रहते हैं।

1. **एकल परिवार:** हम परमेश्वर के उद्धार को लेकर, अपने पति/पत्नी, बच्चे, माता-पिता, और भाई-बहनों तक पहुंचने के लिये क्या कर रहे हैं? क्या हम उनके लिये प्रार्थना करते हैं? क्या हम उनसे परमेश्वर के प्रेम के बारे में बात करते हैं? क्या हम इस प्रकार का जीवन जीते हैं कि हमारे परिवार को दिखता है कि हमारा जीवन परिवर्तित हो गया है?
2. **विस्तृत परिवार (अन्य रिश्तेदार):** क्या हमारे रिश्तेदार जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतान हैं, कि हम पाप और बंधन से छुड़ाये जा चुके हैं और यह कि उसके प्रेम के द्वारा हमारा जीवन बचाया जा चुका है? क्या हम उनके उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहे हैं? उनका परमेश्वर के साथ मेल हो जाये इसकी सहायता करने के लिये हम क्या कर रहे हैं ?
3. **पड़ोसी:** क्या हमारे पड़ोसी जानते हैं कि हम विश्वासी हैं?
4. **कार्यक्षेत्र (स्कूल) के साथी:** क्या हमारे कार्य स्थल (या स्कूल) कें संगी-साथी जानते हैं कि हम मसीह के हैं? क्या हम जिस प्रकार का जीवन जीते हैं उसमें वे देख सकते हैं कि परमेश्वर हम में है ?
5. **सामाजिक नेटवर्क:** कुछ मसीही विश्वासी खेल के क्लब या सामाजिक सामुदायिक सेवा केंद्रों से जुड़ते हैं, जैसे कि रोटरी क्लब, ताकि समाज में जो विश्वासी नहीं है उन लोगों से सामाजिक स्तर पर संपर्क बनाये रखें।

यीशु अपने चेलों को चार भौगोलिक क्षेत्रों में सुसमाचार लेकर जाने का निर्देश देता है: प्रेरितों 1:8

1. **यरूशलेम में** - दूसरे शब्दों में, हमारे गृह नगर या राजधानी शहर में,

2. **यहूदिया में** - हमारे अपने राष्ट्र के लोग के मध्य,
3. **सामरिया में** - पड़ोसी देशों के लोगों में (अपने शत्रुओं को भी)
4. **और पृथ्वी के छोर तक** - समस्त संसार के लोगों तक ।

संसार में गवाही देने के लिए हम अकेले नहीं हैं। विचार करें कि हम नीचे दिये गये समूहो के साथ मिल कर खोए हुओं को मसीह के लिये जीतने का काम कैसे कर सकते हैं।

1. **हमारी कलीसिया (या छोटा समूह) :** हम घरेलू कलीसिया या छोटे समूह के अन्य लोगों के साथ मिलकर, अपने समाज एवं क्षेत्र में गवाही देने का कार्य कैसे कर सकते हैं? क्या हम एक कलीसिया के रूप में हमारे आस पास के खोए हुओं के लिए प्रार्थना करते हैं? क्या हम एक प्रकाश स्तंभ हैं? **मत्ती 5:14-16**
2. **हमारे डिनामनेशन:** हमारे डिनामनेशन के द्वारा, खोए हुओं तक पहुंचने के लिए क्या किया जा रहा है? हम इस प्रकार के प्रयासों में क्या योगदान कर सकते हैं, चाहे राष्ट्रीय स्तर पर हो या अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर?
3. **मिशन समूह:** कौन-कौन सी मिशन संस्थाएं हमारे आस पास कार्यरत् हैं और हम खोए हुओं को बचाने के उनके प्रयासों में क्या योगदान कर सकते हैं? (बाइबिल सोसायटी, कैम्पस, क्रूसेड, आयडा, वाय-वाम, नेवीगेटर्स, ग्लोबल डे ऑफ प्रेयर, लुज़ान कानफेरेन्स, इवैन्जलिज़म एक्सप्लोजन, ग्लोबल यूनीवर्सिटी और अन्य स्थानीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समूह।) फिलिप्पियों 2:1-2

पाठ 17

उद्धार की प्रार्थना और चिन्ह लगाया नया नियम

"उद्धार की प्रार्थना" हमारे द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाओं में सब से महत्वपूर्ण प्रार्थना है। जब एक व्यक्ति मसीही बनने के लिये तैयार है, वह परमेश्वर के साथ अपनी पहली बातचीत करने के लिए तैयार है,

जब आप किसी व्यक्ति की, मसीह को अपने हृदय में ग्रहण करने की प्रार्थना करने में, अगुवाई करते हैं तब आप निम्नलिखित बातों में से प्रत्येक को सम्मिलित करना चाहोगे:

1. **अंगीकार:** यह स्वीकार करना कि यीशु मसीह परमेश्वर है; वह मनुष्य का रूप लेकर पृथ्वी पर आया कि सिद्ध एवं पापरहित जीवन व्यतीत करे; उसने हमारे बदले में अपना प्राण दिया, ताकि हमें वह दण्ड ना चुकाना पड़े जिसके हम पात्र हैं।
2. **पापस्वीकार:** अपने पीछले पापमय जीवन को मान लेना -- कि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करते हुए स्वयं के लिए जीवन व्यतीत करते थे।
3. **स्वीकारोक्ति:** कि हम प्रभु यीशु मसीह में, अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करने के लिये तैयार हैं।
4. **आमंत्रण:** यीशु को अपने हृदय में आने का, वहां वास करने का और अपने संपूर्ण जीवन में जीने का आमंत्रण देना।

उद्धार की प्रार्थना का एक नमूना:

"परमेश्वर पिता, मैं जानता हूँ कि मैं ने आपकी आज्ञाओं का उल्लंघन किया है और मेरे पापों ने मुझे तुझ दूर कर दिया है। मैं इस बात के लिये दु:खी हूं और अब अपने बीते जीवन के पापों से मुड़कर तेरी ओर मुड़ना चाहता हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर, और फिर से पाप न करने में मेरी सहायता कर। मैं विश्वास करता हूँ कि तेरे पुत्र यीशु मसीह ने मेरे पापों के लिए अपना प्राण दिया, वह मृतको में से जी

उठा, जीवित है और मेरी प्रार्थना सुनता है। मैं यीशु को मेरे जीवन का प्रभु बनने के लिये और आज से आगे मेरे हृदय में राज्य करने के लिये आमंत्रित करता हूं। कृपया मेरी सहायता करने के लिये अपने पवित्र आत्मा को भेज कि मैं तेरा आज्ञाकारी बनूं और ृेष जीवन भर तेरी इच्छा पूरी कर सकूं। यीशु के नाम से, मैं इस प्रार्थना को मांगता हूँ, आमीन।"

चिन्ह लगाया गया नया नियम

एक नये खोजी के सामने, उद्धार से संबंधित पहले से चुने गये पदों को पढ़ने हेतु, चिन्ह लगाया गया नया नियम एक सर्वोतम तरीका है।

(आप यह भी कर सकते हैं कि, जिसके साथ आप बात कर रहे हैं उसके हाथ में नया नियम दें और उसे स्वयं उन चुने हुये वचनों को पढ़ने का आमंत्रण दें।)

नया नियम को तैयार करने के लिये सुझाया गया तरीका नीचे दिश गया है।

(इस प्रकार के नया नियम को आप अपने पसंद के पदों का उपयोग करते हुये भी कर सकते हैं। अलग-अलग रंग के मार्कर/ हाईलाइट पैन से विभिन्न विषय के पदों को रेखांकित कर लें: जैसे कि पीला रंग उद्धार के लिए, नीला रंग स्वर्ग से संबंधित पदों के लिए, इत्यादि।)

1. उद्धार के मार्ग को समझने के लिए आप जिन पदों का उपयोग करेंगे उन्हें रेखांकित कर लें या रंग कर दें।
2. एक छोटे पेपर पर 1 लिखें और उसे प्रथम पद, जैसे कि रोमियों 3:23, के पृष्ठ के साथ ऐसे रखें कि 1 बाहर दिखता रहेगा।
3. उस पृष्ठ के हाशिए में लिखिए: "क्रमांक 2 के लिए पृष्ठ संख्या . . . देखें।" खाली स्थान . . . पर आपके बाइबल में रोमियों 6:23 के लिये जो पृष्ठ है उसकी संख्या लिखिए जहाँ आपने दूसरा चिन्ह लगा रखा हो।
4. आगे दिए गए पदों के लिए इसी प्रकार करते जाइए, हर एक पद को समझाइए - यूहन्ना 1:12; 1 यूहन्ना 1:9; प्रकाशितवाक्य 3:20; 1 यूहन्ना 5:10-13

गृहकार्य : चिन्ह लगाया गया नया नियम तैयार करें और अपने सहपाठी के साथ, एक से दूसरे पदों पर जाते हुये सुसमाचार बताने का अभ्यास करें ।

पाठ 18

सुसमाचार-प्रचार में सहायता हेतु कुछ साधन और योजनाएं

इस अध्याय में हमारा परिचय उन जाने-माने साधनों से कराया जायेगा जो अविश्वासियों के बीच सुसमाचार समझने में बहुत सहायक हैं।

1. **"चार आत्मिक नियम"** नामक छोटी पुस्तक इन दिनों में गवाही के लिए बहुत प्रयोग में लायी जाती है, और यह बहुत प्रभावकारी है।
2. **"रोमी रास्ता"** भी बहुतों के द्वारा पसंद की जाने वाली पद्धति है। रोमियों की पत्री में से उन पदों को दिखायें जब आप उन्हें समझते हैं।
   (क) मनुष्य की आवश्यकता - रोमियों 3:23
   (ख) पापों की सजा - रोमियों 6:23
   (ग) परमेश्वर का उपाय - रोमियों 5:8
   (घ) मनुष्य का प्रत्युत्तर - रोमियों 10:9
3. **"शब्द रहित पुस्तक"** - अपने काले, लाल, सुनहरे, सफेद और हरे पृष्ठों के साथ यह बालकों और मौखिक पद्धति से सीखने वालों के लिये बहुत सहायक है।
   (क) सुनहरा पृष्ठ - उन बातों को दर्शाता है जो परमेश्वर ने हमारे लिये स्वर्ग में रखीं हैं। यूहन्ना 14:3
   (ख) काला पृष्ठ - हमारे पापी हृदय को दर्शाता है। रोमियों 3:23
   (ग) लाल पृष्ठ - हमारे पापों के लिये यीशु के बलिदान को दर्शाता है। - यूहन्ना 1:9
   (घ) सफेद पृष्ठ - परमेश्वर द्वारा धोये गये हृदय को दर्शाता है। प्रकाशित 7:14
   (ङ) हरा पृष्ठ - परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह में होने वाली हमारी उन्नति को दर्शाता है। 2 पतरस 3:18
4. **पाँच उँगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार** यह एक और तरीका है, और यह

विशेषकर बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी है। यहाँ न किसी साधन की ना ही किसी पुस्तक की आवश्यकता होती है; मात्र अपनी हाथ की उँगलियों की ओर संकेत करना है।

(क) पहली उँगली - परमेश्वर आपको प्यार करता है। - यूहन्ना 3:16

(ख) दूसरी उँगली - सब ने पाप किया है। - रोमियों 3:23

(ग) तीसरी उँगली - आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए मसीह ने अपना प्राण दिया। - 1कुरिन्थियों 15:3

(घ) चौथी उँगली - विश्वास करें कि मसीह ने आपके पापों के लिए अपना प्राण दिया। - यूहन्ना 1:12

(ङ) पांचवी उँगली - जब आप विश्वास करते हैं, आप अनंत जीवन पाते हैं। - रोमियों 6:23

5. एक पद पर आधारित सुमाचार-प्रचार योजना - रोमियों 6:23 का उपयोग करते हुये: इस पद में आने वाले, नीचे दिखाये गये, शब्दों पर गोला बनाएं और उनके अर्थ और/या महत्व को समझाएं:

(क) मजदूरी - हम जैसा बोएंगे, वैसा काटेंगे।

(ख) पाप - हमारे पापमय कार्यों और विचारों ने हमें, हमारे पवित्र परमेश्वर से अलग कर दिया है।

(ग) मृत्यु - पाप का परिणाम परमेश्वर से अनंत अलगाव है।

(घ) वरदान - मजदूरी के विपरीत, जो कि कमाने से प्राप्त होती है, वरदान निशुल्क दिया जाता है।

(ङ) परमेश्वर - सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमें अद्‌भुत, आश्चर्यजनक वरदान देता है।

(च) अनंत जीवन - अनंत अलगाव के एकदम विपरित, परमेश्वर हमें अनंत जीवन देता है।

(छ) मसीह यीशु - यह वरदान हम यीशु से अपने पापों की क्षमा मांग कर और उसे अपने हृदय में बुलाकर प्राप्त कर सकता हैं।

(ज) प्रभु - जब हम यीशु को अपने हृदय में बुलाते हैं, वह हमारा प्रभु बन जाता है।

गृहकार्य - उपरोक्त योजनाओं से कौन सा अपनाना चाहेंगे उसका चुनाव कर लें। पदों को याद कर लें। तत्पश्चात् अपने किसी सहपाठी के सामने उसे प्रस्तुत करने का अभ्यास करें। उनसे एक निश्चित समर्पण की मांग करते हुये अपना प्रस्तुतिकरण समाप्त करें, तब पापों की क्षमा मांगने हेतु प्रार्थना करने की ओर उनकी अगुवाई करें।

पाठ 19

चार आत्मिक नियम

परिचयः चार आत्मिक नियम अंर्तर्राष्ट्रीय कैम्पस क्रूसेड फॉर क्राइस्ट के संस्थापक डा. बिल ब्राइट ने लिखे थे। ये बड़ी सरल और स्पष्ट रीति से समझाते हैं कि चार प्रकार के आत्मिक नियम हैं, जो संसार में प्रत्येक व्यक्ति पर असर डालते हैं।

- सुसमाचार प्रचार की **चार आत्मिक नियम** की पद्धति सुनने वालों को सुअवसर प्रदान करती है कि इन चार नियमों को दिये जाने वाले अपने उत्तर पर सोच-विचार करें।
- प्रत्येक नियम पिछले नियम पर आधारित होकर बढ़ता जाता है।
- कैम्पस क्रूसेड ने न्यूनतम दर पर चार आत्मिक नियमों के पैम्फलेट्स छापे हैं। यह उनकी वेबसाइट से इंटरनेट द्वारा निःशुल्क प्राप्त किए जा सकते हैं।

योजना : जिस प्रकार भौतिक नियम होते हैं जो भौतिक जगत को निर्धारित करते हैं, उसी प्रकार आत्मिक नियम होते हैं जो लोगों के परमेश्वर से संबंध को निर्धारित करते हैं।

1. **पहला नियमः परमेश्वर आपसे प्रेम करता है,** और आपके जीवन के लिये अद्‌भुत योजना का प्रस्ताव देता है।
   (क) परमेश्वर का प्रेम - यूहन्ना 3:16
   (ख) परमेश्वर की योजना - यूहन्ना 10:10
2. **दूसरा नियमः मनुष्य पापी है** और परमेश्वर से अलग हो गया है। इसलिए वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर के प्रेम को और अपने जीवन के लिये परमेश्वर की योजना को नहीं जान सकता है और ना ही अनुभव कर सकता है।
   (क) मनुष्य पापी है - रोमियों 3:23
   (ख) मनुष्य अलग हो गया है - रोमियों 6:23
3. **तीसरा नियम : यीशु मसीह ही वह एकमात्र प्रबन्ध है** जो परमेश्वर ने

मनुष्य की पाप-क्षमा के लिए किया है। उसके द्वारा आप परमेश्वर के प्रेम तथा आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं।

(क) वह हमारे बदले में मरा - रोमियों 5:8

(ख) वह मृतकों में से जी उठा - 1 कुरिन्थ 15:3-4

(ग) वही परमेश्वर तक पहुँचने का एक मात्र मार्ग है। - यूहन्ना 14:6

4. **चौथा नियमः हमें व्यक्तिगत रूप से स्वीकार** करना है कि यीशु मसीह 'मेरा अपना उद्धारकर्ता और प्रभु है।' तत्पश्चात् हम अपने जीवनों के लिये परमेश्वर के प्रेम को और उसकी योजना को जान सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं।

(क) हमें मसीह को ग्रहण करना आवश्यक है। - यूहन्ना 1:12

(ख) हम मसीह को विश्वास के द्वारा ग्रहण करते हैं। - इफिसियों 2:8-9

(ग) जब हम मसीह को स्वीकार करते हैं, हम नए जन्म का अनुभव पाते हैं। -यूहन्ना 3:18

(घ) व्यक्तिगत् नियंत्रण देकर हम मसीह को ग्रहण करते हैं।- प्रकाशित 3:20

अभ्यासकार्यः विद्यार्थियों से कहें एक दूसरे को ये चार आत्मिक नियम बताने का अभ्यास करेंगे और उनके साथ दिये गये बाइबल पाठों को भी पढ़ेंगे।

तीन खंड़ों में गृहकार्य :

1. चारों आत्मिक नियमों को, और प्रत्येक के साथ दिये गये बाइबल पदों को भी, मुखाग्र कर लें। (संभवतः आपने इन पदों को पाठ 3 के दौरान मुखाग्र कर लिया होगा।)
2. चार आत्मिक नियम को, कम से कम तीन अविश्वासियों के समक्ष प्रस्तुत करने का अभ्यास करें।
3. तैयार रहें कि कल आप कक्षा के समक्ष अपने उन अनुभवों को बतायेंगे, जो आपको चार आत्मिक नियम प्रस्तुत करते समय हुये होंगे।

पाठ 20

उद्धार का रोमी रास्ता

प्रस्तावना: रोमियों की पुस्तक के वचनों का उपयोग करते हुए उद्धार के रास्ते का स्पष्टीकरण किया जा सकता है।

- चार आत्मिक नियमों के समान ही रोमी रास्ते को भी दिए गए क्रम में ही बताया जाना चाहिए।
- सुसमाचार सुनाने की इस पद्धति का मुख्य लाभ यह है कि सारे वचन एक ही पुस्तक में पाए जाते हैं जिस के कारण उन्हें खोजना सरल और सरल होता है। (जैसा इस पाठ्यक्रम पहले कहा गया है, इन वचनों को आपकी बाइबल में चिन्हित कर लेना सहायक होगा।)

रोमी रास्ता: आप अनंतकालिक परिणाम के वार्तालाप का आरंभ प्रश्न पूछने से करते सकते हैं। उसक बाद, जिस व्यक्ति से आप बात कर रहे हैं उसे उन प्रश्नों के वे उत्तर बतायें जो बाइबल में मिलते हैं। उदाहरण के लिये:

1. **क्या आप सोचते हैं कि आप एक भले/अच्छे मनुष्य हैं?**
   "जैसे कि लिखा है, कोई भी धर्मी नहीं एक भी नहीं।"- रोमियों 3:10

2. **क्या आपने कभी पाप किया है?**
   "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" - रोमियों 3:23

3. **पाप कहाँ से आया है?**
   "अत: जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया, तथा पाप के द्वारा मृत्यु ने, उसी प्रकार जब मृत्यु मनुष्यों में फैल गयी, क्योंकि सब ने पाप किया।" - रोमियों 5:12

4. **पाप की मजदूरी क्या है?**
   "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परंतु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनंत जीवन है।"- रोमियों 6:23

5. **आपके के लिए मृत्युदण्ड की कीमत किसने चुकायी?**
   "परंतु परमेश्वर अपने प्रेम को हमारे प्रति इस प्रकार प्रमाणित करता है कि

जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिए मरा।" - रोमियों 5:8

6. आपका उद्धार कैसे हो सकता है ?

"कि यदि तू अपने मुख से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करें, और अपने मन में यह विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है। क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।" - रोमियों 10:9-11

7. परमेश्वर की प्रतिज्ञा।

"क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।" रोमियों 10:13

कक्षा-कार्य: दो-तीन विद्यार्यियों को कक्षा के दूसरे विद्यार्थियों के सामने रोमी रास्ता प्रस्तुत करने कहें।

गृहकार्य: यदि आपने अभी तक नहीं किया है तो अपनी बाइबिल में रोमियों की पत्री के ऊपर दिये सात हवालों पर निशान लगा लें, और उन्हें कंठस्थ कर लें।

पाठ 21

शब्दरहित पुस्तक

शब्दरहित पुस्तक हमें बाइबल से एक अद्‌भुत कहानी सुनाती है जो उस सच्चे और जीवित परमेश्वर के विषय में है जिसने जगत की रचना की है और हम सब से प्रेम किया है।

सुनहरा पृष्ठ हमें स्वर्ग का स्मरण करता है। बाइबल हमें बताती है कि स्वर्ग में नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की है। - प्रकाशितवाक्य 21:21

1. परमेश्वर हमें अपने निवास-स्थान के विषय में अनेक बातें बताता है। वहाँ स्वर्ग में कोई बीमारी, मृत्यु नहीं है, परंतु सर्वदा के लिये पूर्णत: आनन्द ही आनन्द है। प्रकाशितवाक्य 21:4-23
2. स्वर्ग से संबंधित सर्वाधिक अद्‌भुत बात यह है कि वहाँ परमेश्वर हैं।
3. परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना की, आपकी और मेरी भी, और वह आप से अत्यधिक प्रेम करता है। यूहन्ना 3:16
4. इसलिए कि परमेश्वर ने आपको बनाया और आप से प्रेम करता है, वह चाहता है कि आप उसके परिवार के सदस्य बनें और किसी दिन उसके साथ स्वर्ग में हों। यूहन्ना 14:2

काला पृष्ठ मनुष्य के पाप को दर्शाता है। बुरी बातें करना या बोलना, यहां तक कि सोचना भी, पाप है। परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में जो नियम दिए हैं उनका पालन न करना पाप है।

क्या आप जानते हैं कि आप पापी हैं?

1. परमेश्वर का वचन कहता है कि सब ने पाप किया है। रोमियों 3:23
2. पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है क्योंकि परमेश्वर सिद्ध रूप से पवित्र है।
3. परमेश्वर ने बताया है कि पाप का दण्ड मिलना अनिवार्य है। पाप का दण्ड मृत्यु अर्थात् परमेश्वर से सर्वदा के लिए अलग कर दिया जाना है। रोमियों 6:23

4. परमेश्वर जानता था कि हम उसे प्रसन्न करने योग्य कुछ भी भलाई नहीं कर सकते हैं। परन्तु वह हम से प्रेम करता है और उसने एक मार्ग तैयार किया कि आपको पापों की क्षमा मिले।

लाल प्याला हमें यीशु के द्वारा हमारे उद्धार के लिये बहाये हुये रक्त और उसकी मृत्यु का स्मरण दिलाता है।

परमेश्वर हम से बहुत अधिक प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर भेजा। उसने एक नन्हें बालक के रूप में जन्म लिया। वह बढ़ता गया और एक मनुष्य बना।

1. यीशु पवित्र था, सिद्ध था। उसने कभी एक भी गलत काम नहीं किया।
2. परन्तु एक दिन, दुष्ट लोगों ने उसके सिर पर काटों का मुकुट रखा और उसे कीलों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाया। बाइबल बताती है कि जब वह वहाँ चढ़ाया गया तब परमेश्वर ने हम सब के पापों को उसके ऊपर लाद दिया। यशायाह 53:6
3. परन्तु तीन दिनों के बाद सब से अधिक अद्‌भुत बात हुई। परमेश्वर ने उसे पुनः जीवित कर दिया। उसने यीशु को मृत्यु में से जीवित किया। यीशु जीवित उद्धारकर्त्ता है। - 1 कुरिन्थियों 15:4

   सफेद प्याला हमें बताता है कि हम अपने पापों से शुद्ध किए जा सकते हैं। भजन संहिता 51:7

   1. इसके विषय में परमेश्वर ने हमें बाइबल में बताया है। - यूहन्ना 3:16
   2. बाइबिल कहती है कि यदि हम अपने पापों के लिये पश्चाताप करें (अर्थात पापों से दूर हो जायें), तो वे मिटाए जा सकते हैं (प्रेरित 3:19)। बाइबल यह भी कहती है कि यदि हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं तो हमारा उद्धार होगा (प्रेरित 16:31)।
   3. क्या आप ऐसा अभी मेरे साथ करना चाहेंगे? (यदि, सुनने वाले का उत्तर "हां" है तो उसके साथ मिलकर मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने हेतु प्रार्थना करें)।

हरा प्याला हमें उन बातों का स्मरण दिलाता है जो वृद्धि करती हैं, जैसे कि

पत्तियां, घास और वृक्ष। यह हमें उस अनंत जीवन का भी स्मरण दिलाता है जो हम परमेश्वर से प्राप्त कर सकते हैं।

1. बाइबिल हमें कहती है कि हम परमेश्वर के साथ के अपने चाल-चलन में बढ़ते जायें। - 2 पतरस 3:18
   (पाठ 12: 'व्यक्तिगत् सुसमाचार-प्रचार के लिये सात कदम' इस पाठ में उन सुझावों को दिया है जो नये विश्वासियों को उनके मसीही विश्वास और चाल-चलन में बढ़ने के लिये दिये जाने चाहिये।)
2. जैसे-जैसे हम परमेश्वर में बढ़ते जायेंगे, वह हमारी सहायता करेगा कि हम पाप से दूर रह सकें। भजन 119:11

पाठ 22

पाँच उँगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार

परिचय: सुसमाचार-प्रचार की इस पद्धति के लिए किसी विशेष साधन या पुस्तकों की आवश्यकता नहीं होती। एक हाथ की उँगलियों का प्रयोग करते हुए उद्धार की योजना का स्पष्टीकरण किया जाता है। इस पद्धति के लिए आवश्यक होता है कि आप उपयोग में लाए जानेवाले वचनों को कण्ठस्थ कर लें (संभवत: यह आपने अब तक कर लिया होगा), परन्तु यह पद्धति इतनी व्यावहारिक होती है कि आप सुसमाचार बताने के लिए सर्वदा तैयार होते हैं। यदि सुननेवाला इच्छुक जान पड़ता है, और यदि ऐसा करना उचित लगता है, तो आप उसका हाथ पकड़कर प्रत्येक उँगली को संकेत करते हुए उसका अर्थ बता सकते हैं।

(क) पहली उँगली - परमेश्वर आपको प्यार करता है। - यूहन्ना 3:16

(ख) दूसरी उँगली - सब ने पाप किया है। - रोमियों 3:23

(ग) तीसरी उँगली - आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए मसीह ने अपना प्राण दिया।
- 1 कुरिन्थियों 15:3

(घ) चौथी उँगली - विश्वास करें कि मसीह ने आपके पापों के लिए अपना प्राण दिया।
- यूहन्ना 1:12

(ङ) पांचवी उँगली - जब आप विश्वास करते हैं, आप अनंत जीवन पाते हैं।
- रोमियों 6:23

कक्षा कार्य :

1. विद्यार्थी दो-दो करके एक दूसरे को पांच उँगलियों वाला सुसमाचार का संदेश सुनाएं। अब तक उन्हें बाइबल के वे पद याद हो गये होंगे जो उन्हें प्रत्येक उँगली को पकड़कर कहने होंगे।

2. जब प्रत्येक विद्यार्थी को एक बार आपस में अभ्यास करने का अवसर मिल चुका हो, कुछ-एक को उसे पूरी कक्षा में वही अभ्यास प्रस्तुत करने को कहें।

गृहकार्य :

1. यदि आप ने अभी तक न किया हो तो पांच उँगलियों के लिये आवश्यक पदों को मुखाग्र कर लें।
2. कम से कम तीन अविश्वासियों को पांच उँगलियों द्वारा सुसमाचार सुनाने का अभ्यास करें।
3. अपनी कक्षा में, अगले दिन, पांच उँगली वाले संदेश को सुनाते समय आपको जो अनुभव हुये हों उन्हें प्रस्तुत करने के लिए तैयार रहें।

पाठ 23

शिष्य बनाना

2 तीमुथियुस 2:2

प्रस्तावना: किसी को प्रभु में लाना एक अद्‌भुत बात है। परंतु उतना ही महत्वपूर्ण है एक नये विश्वासी को मसीह का सच्चा शिष्य बनने की शिक्षा एवं अगुवाई देना।

नये विश्वासियों का ध्यान रखना:

1. एक नया विश्वासी, मसीह में एक नन्हा-सा बालक है। अत: आवश्यक है कि उसका, एक नए जन्मे शिशु के समान ही, प्यार से ध्यान रखा जाये। नये परिवर्तित व्यक्ति के लिये पहला सप्ताह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि शैतान उसके मन में हर प्रकार से संदेह डालने का प्रयत्न करेगा। उनसे प्रतिदिन मिलें और साथ में वचन पढ़ें और उनके साथ प्रार्थना भी करें।
2. सुनिश्चित करें कि नये विश्वासी इन बातों को समझते हैं कि परमेश्वर निश्चित रूप से उनसे प्यार करता है और बदले में वे परमेश्वर से कैसे प्रेम करें।
3. दूसरों के साथ यीशु के बारे कैसे दृढ़तापूर्वक बात करें इसका उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करें। अपने नये विश्वास के संबंध में औरों को कैसे बतायें यह उन्हें सिखायें।
4. नये मसीही को परमेश्वर के वचन से पूरी रीति से भरा हुआ हो जाना चाहिये - क्योंकि वचन ही वह दूध है जो उन्हें वृद्धि करने में सहायक होगा (1पतरस 2:2)। उनकी सहायता करें कि व्यक्तिगत रीति से और बाइबल अध्ययन समूह में सम्मिलित होकर बाइबल का अध्ययन कैसे करना है।
5. उन्हें प्रार्थना करना सिखाएं - परमेश्वर से बात करना और परमेश्वर की आवाज सुनना भी सिखायें।

6. उन्हें परमेश्वर के मिशन में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करें। परमेश्वर के प्रेम में होकर अपने आस-पास के लोगों की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनने में उनकी सहायता करें।
7. उनके साथ खोज करें कि परमेश्वर कैसे उनके जीवन के टूटेपन को ठीक कर सकता है। अनेक लोग मसीह के पास नशा, बुरी आदतों के साथ या कुछ तो मनोवैज्ञानिक घाव लेकर आते हैं। परमेश्वर चाहता है कि वे अपने भूतकाल के पापी जीवन के ऐसे सभी प्रभावों से चंगे हो जाएं।
8. मसीह के समान बनने के लिए उन्हें अपने जीवन में क्या-क्या परिवर्तन लाने होंगे यह समझने के लिए उनकी सहायता करें।
9. आपकी कलीसिया में नये विश्वासियों को बपतिस्मा हेतु तैयार करने के लिये वचन पर आधारित पाठ्यक्रम होगा। यदि है तो उनकी सहायता करें कि अपने विश्वास का अंगीकार करने के तुरंत बाद उसे सीखना आरंभ करेंगे।
10. यहाँ पर बडे भाई को छोटे भाई के साथ, या बड़ी बहन को छोटी बहन के साथ, जोड़ने का सुअवसर होगा। सावधानीपूर्वक, नये विश्वासी के साथ एक परिपक्व व्यक्ति को जोड़ दें जो उसके प्रति चिंता जताने वाला मसीही हो और उसके साथ लगातार मिल सके और उसे परमेश्वर के प्रेम की परिपूर्णता में बढ़ने में सहायता करे।

आत्मिक सलाहकार (अथवा बड़े भाई या बड़ी बहन) की भूमिका

सलाहकार:

- प्रार्थना और पवित्रता के जीवन का आदर्श प्रस्तुत करना
- सही सिद्धांतो की शिक्षा देना
- नये विश्वासियों के प्रश्नों के उत्तर देना
- नये विश्वासियों को सह-विश्वासियों के समूह की खोज करके उनके साथ संगति और आराधना करने के लिये प्रोत्साहित करना
- नये विश्वासियों को विश्वास के जीवन में, गवाही देने में और आत्मिक समर्पण में बढ़ने की अगुवाई करना

चर्चा: विद्यार्थियों को कक्षा में नीचे दिये गये दो प्रश्नों पर चर्चा करने कहें:

1. आपकी देखरेख या कलीसिया में जो नये विश्वासी है उन्हें प्रोत्साहन या आत्मिक पोषण कैसे दिया जा सकता है?
2. आप, बडे भाई/छोटे भाई या बड़ी बहन/छोटी बहन की जोड़ियां कैसे नियुक्त कर सकेंगे?

पाठ 24

दूसरों को आत्मा-जीतने वाले बनने में सहायता करना

प्रस्तावना: परमेश्वर हमें आह्वान देता है कि हम उद्धार के सुसमाचार को सारी दुनिया में ले जायें!

- यशायाह नबी के द्वारा परमेश्वर ने प्रश्न किया है, "मैं किसको भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा? मैं किसको भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?" यशायाह 6:8
- यीशु ने कहा, "पक्के खेत बहुत हैं, परन्तु मजदूर थोड़े हैं .....।" लूका 10:2
- अपने स्वर्गारोहण से पहले, यीशु ने अपने शिष्यों को दिया निर्देश यह था कि वे सब जातियों के लोगों को चेला बनाएं। मत्ती 28:19
- वही आह्वान् आज भी परमेश्वर की संतानों के लिए लागू होता है। अब हमें, आत्मिक कटनी के लिए, पहले से कहीं अधिक काम करना है, क्योंकि, "वह रात आने पर है, जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।" लूका 9:4

मसीह के सुसमाचार को सर्वत्र सब लोगों तक ले जाने हेतु हम क्या कर सकते हैं?

1. जहां तक हमारा प्रभाव हो सकता है, उन सभी क्षेत्रों में यीशु के सुसमाचार को ले जाने के लिये हमें हर संभव प्रयास करना चाहिये।
2. हमें अन्य विश्वासियों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करना चाहिये कि अपने-अपने पहुंच के क्षेत्रों में यीशु मसीह के उद्धार का संदेश लेकर जाने के लिये वे हर संभव प्रयास करें।

चार विशिष्ट तरीके हैं जिनके द्वारा मसीही अगुवे दूसरे विश्वासियों को सफल आत्मा जीतने वाले बनने में सहायता कर सकते हैं।

1. हम दूसरों को अपने नमूने के द्वारा अगुवाई दे सकते हैं (अवश्य देना चाहिये)।

(क) हमें युवा विश्वासियों- और जो विश्वास की युवावस्था में है उन्हें- आत्मा जीतने वाला बनाने की सलाह देने के गंभीर प्रयास करने चाहिये।

(ख) इवैन्जलिज़म एक्सप्लोज़न के संस्थापक डा. जेम्स कैनेडी नहीं जानते थे कि किसी को प्रभु के पास कैसे लाया जाता है। यह बात उन्होंने तब ही जानी जब उनके पासबान उन्हें अपने साथ एक घर में भेंट करने के लिये ले गये। डा. कैनेडी ने गौर से देखा कि उनके पासबान ने एक व्यक्ति की प्रभु की ओर अगुवाई कैसी की। तब वे, अपने पासबान के नमूने का अनुसरण करते हुये, स्वयं एक बड़े आत्मा जीतने वाले बन गए।

2 वे जो पासबान हैं, आत्मा जीतने के महत्व पर सैकड़ो संदेश दे सकते हैं।

(क) इस पाठ्यक्रम के आरंभिक अध्यायों से, ऐसे अनेक संदेशों के लिये रूपरेखा मिल सकती है जिनके द्वारा औरों को मसीह के उद्धार के गवाह बनने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(ख) इवैन्जलिज़म एक्सप्लोज़न एक ऐसा ही उत्तम उपयुक्त पाठ्यक्रम है। अन्य अच्छे प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इन्टरनेट पर भी मिल सकते हैं।

3. हम आत्मा जीतने वाले प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम आयोजित कर सकते हैं।

(क) प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम से एक लाभ यह होता है कि आप उसे पढ़ाने के दौरान बाहर जाकर आत्मा जीतने का अभ्यास कर सकते हैं। इसमें आप अपने विद्यार्थियों के साथ दो-दो करके जाकर सुसमाचार सुना सकते हो।

(ख) इन्वैज़लिज़म एक्सप्लोज़न ऐसे ही प्रशिक्षण-पाठ्यक्रमों में से एक हैं। अन्य और अच्छे प्रशिक्षण-पाठ्यक्रम इन्टरनेट पर मिल करते हैं।

4. हम आत्मा जीतने पर अभ्यास-पुस्तिकाएं और छोटे छोटे सहित्य, सुसमाचार के पर्चे ले सकते हैं और उन्हें अपनी आत्मिक देखरेख में पाए जाने वाले लोगों के मध्य बांट सकते हैं।

स्मरण रखें: मात्र बीज बो देना ही पर्याप्त नहीं है। शिष्य बनाने के लिये पुनः सम्पर्क बनाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मसीह में उद्धार पाने के लिए खोए हुओं को जीतना।

गृहकार्य : हम अपने लोगों को, गवाह बनने के लिये अपना उदाहरण देकर कैसे सिखा सकते हैं? तीन विशेष प्रकार की कल्पनाओं को तैयार करें।

पाठ 25

जब परमेश्वर हमें बाहर भेजता है

लूका 10:1-11

प्रस्तावना: लूका के अध्याय 10 में, जिस में यीशु अपने शिष्यों को बाहर भेजता है, हम व्यक्तिगत् सुसमाचार-प्रचार के दस सिद्धांत देख सकते हैं।

सिद्धांत 1: किसी को साथ में लो और जाओ

लूका 10:1

1. यीशु ने शिष्यों को दो-दो करके भेजा। जब विश्वासी एक साथ मिलकर कार्य करते हैं तब उसमें सहजीवी बल होता है।
2. जितना संभव हो, अकेले न रहें। पौलुस के साथ बरनवास था, लूका के साथ सीलास था। पतरस और यूहन्ना प्रायः साथ-साथ रहते थे। यीशु मसीह की भी अपनी एक टीम थी।

सिद्धांत 2: प्रार्थना करें, परमेश्वर से मांगे कि वह आपकी टीम में और भी लोगों को जोड़ दे। लूका 10:2

1. टीम गठित करें, प्रशिक्षण पर खर्च करें और अपने बोझ को उठाने में सहायता मिलने हेतु दूसरों को तैयार करें।
2. दूसरों को अवसर प्रदान करें कि वे अपने आत्मिक वरदानों को चमकाएं।

सिद्धांत 3: खतरों की अपेक्षा रखें। लूका 10 :3

1. जब हम सत्य को दृढ़ता से बोलेंगे तब विरोध होगा ही।
2. शत्रु नहीं चाहता है कि हम उससे उन्हें छुड़ा ले जिन्हें उसने बांध कर रखा है, परंतु " जो हम में है, वह उससे जो संसार में है, बडा है।" 1 यूहन्ना 4:4

सिद्धांत 4 : यात्रा में अधिक बोझ न लें, और अपने निशाने से ध्यान हटने ना दें। लूका 10:4

1. अनेक अच्छे कारण हो सकते हैं-परंतु महान् आदेश एक ही है!

2. लोगों को प्रभु की नितांत आवश्यकता है। सुस्त न बनें और न विचलित हों।

सिद्धांत 5: परमेश्वर की शांति प्रदान करें। लूका 10:5

1. हम कहीं भी शांति के राजकुमार के राजदूत बनकर पहुंचते हैं। परमेश्वर की शांति प्रदान करें।
2. परमेश्वर निश्चित समय में संसार का न्याय करेगा; तब तक, हम उसके नाम में उसकी दया, अनुग्रह, क्षमा, प्रेम और शांति का अद्‌भुत संदेश देते हुये पहुंचते हैं।

सिद्धांत 6 : एक शांति-पुरुष (व्यक्ति) को खोजें। लूका 10:6

1. हृदयों को तैयार करने वाला परमेश्वर है; उन्हें खोजें जिनके हृदय को उसने तैयार किया है।
2. परमेश्वर के उद्धार के प्रकाश को उल्लसित होकर चमकायें, ताकि जो परमेश्वर से शांति की खोज में हैं, वे प्रत्युत्तर दें पाएंगे।

सिद्धांत 7: जब पहुनाई की जाती है तब उसे स्वीकर करें। लूका 10:7-8

1. एक साथ रोटी तोड़ने में कुछ सामर्थमय (लगभग आलौकिक) बात होती है।
2. अविश्वासियों के साथ समय व्यतित करें। अपना हृदय और जीवन उनके लिये उदार होने दें।

सिद्धांत 8: परमेश्वर के राज्य की घोषणा करें और उसे प्रदर्शित करें। लूका 10:9

1. परमेश्वर से आश्चर्य कर्म की अपेक्षा रखें और उसके महिमामय उपस्थिति की घोषणा करें।
2. जब-जब परमेश्वर अपने सामर्थ को उण्डेलता है तब-तब उसे उसके सत्य की घोषणा करने का अवसर समझें।

सिद्धांत 9: विरोध की अपेक्षा करें। लूका 10:10-11

1. वे जो शत्रु (शैतान) के अधिकार में होते हैं, हमारे सत्य के संदेश का विरोध करेंगे।
2. शैतान, छुटकारे और उद्धार के संदेशवाहकों को नाश करने का प्रयास करेगा, परन्तु जब हम परमेश्वर के नाम में जाते हैं तब वह हमें विजयी दिलाता है।

सिद्धांत 10: वहां परमेश्वर साथ होगा।

लूका 10:11

1. हम घोर अंधकार से भरे किसी भी समय से जा रहे हों, वहां परमेश्वर हमारे साथ रहता है।
2. जब हम अपनी निराशाओं के समय में परमेश्वर को पुकारते हैं, वहां वह हमारे साथ रहता है।

उपसंहार:

- परमेश्वर हमें बाहर भेजता है। यूहन्ना 20:21
- परमेश्वर हमें विजय दिलाता है। 1 कुरिन्थियों 15:57

पाठ 26

सुसमाचार-प्रचार क्षेत्र के लिये तैयारी

प्रस्तावना: परमेश्वर कुछ लोगों को बुलाहट देता हैं कि वे अपना घर त्याग कर सुसमाचार को लेकर दूर-दूर तक जाएं, कुछ को परदेश जाने के लिए भी बुलाता है। **उन लोगों के लिये, जिन्हें वह मिशनरी बनकर जाने के लिये बुलाता है, नीचे कुछ सहायक सुझाव हैं:**

घर छोड़ने से पहले मिशनरी सेवा के लिये तैयारी:

1. जिन लोगों के मध्य आप जा रहे हैं, उनके विषय में जितनी अधिक हो सके उतनी जानकारी प्राप्त कर लें।
   (क) लोगों में प्रचलित धार्मिक आस्थाओं के बारे में जान लें।
   (ख) यदि सम्भव हो तो उनकी भाषा को थोड़ा-बहुत सीख लें।
   (ग) उनकी संस्कृति के बारे में जान लें जिससे आप अनावश्यकरूप से किसी को ठेस न पहुंचा पाएं।
   (घ) वहां के लोग आपके क्षेत्र के लोगों को क्या समझते हैं इसके बारे में जान लें ताकि उनकी पूर्वधारणाओं के कारण आपको उनसे किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करनी चाहिये और अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिये इसके बारे में आप उचित तैयारी कर सकें।
2. घर से निकलने से पहले आत्मिक अनुशासन का अभ्यास कर लें।
   (क) अपनी गृह-कलीसिया के विश्वासयोग्य सहभागी सदस्य बने रहें।
   (ख) लोगों को मसीह में लाने और उनहें ं शिष्य बनाने के काम में विश्वासयोग्यता से लगे रहें।
3. एक मजबूत सहायता-टीम का गठन करें जो प्रार्थना और आर्थिक सहयोग में आपका साथ देगी।
4. यदि आप विवाहित हैं तो यह सुनिश्चित कर लें कि आप अपने परिवार

के लिये घर, चिकित्सा तथा शिक्षा की सुविधाओं का प्रबंध कर दें।

5. सेवा की कार्य-योजना को, अपने आत्मिक वरदानों के आधार पर विकसित करें, जिससे आपख़ख़
   (क) अपने संदेश को इस रीति से प्रस्तुत कर सकेंगे कि लोग उसे उन्हें और उस पर विचार करें।
   (ख) नये विश्वासियों को, जिन्हें पवित्र आत्मा आपकी देख-रेख में देगा, शिष्य बना पाएंगे।
6. जिस स्थान में आप सेवा करने पर हैं, वहां के लिये आवश्यक कानूनी दस्तावेज प्राप्त कर लें।

अपने सुसमाचार-प्रचार के क्षेत्र में आरंभ करना

1. स्वास्थपूर्ण भोजन की व्यवस्था तथा रहने के लिए एक स्थान सुरक्षित करें। (यह सलाह दी जा सकती है कि आप पहले से उस स्थान में जाकर अपने परिवार हेतु रहने की सुविधा का प्रबंध कर लें।)
2. स्थानीय चिकित्सा सेवाओं से (स्वास्थसंबंधी आपातकाल में आवश्यक होने वाली से भी) सुपरिचित हो जायें।
3. निवास सम्बंधी हर तरह की आवश्यक कानूनी-कागजी कार्यवाही पूर्ण कर लें।
4. पड़ोसियों को, सामाजिक एवं सरकारी अगुवों इत्यादियों को अपना परिचय दे दें। मित्र भाव से, स्वयं को दूसरों के लिए उपलब्ध रखें, खुश- मिजाज और सहायता करने योग्य आदि गुणों से भरे रहें।
5. वहां के लोग और क्षेत्र, उनके रीति-रिवाज और इतिहास आदि की जानकारी प्राप्त कर लें।
6. यह सुनिश्चित कर लें कि आप सभी स्थानीय कानूनी और नियमों से तालमेल बैठाकर प्रत्येक कार्य करें।
7. यदि उस क्षेत्र में विश्वासी पाए जाते हैं तो अपना परिचय अन्य अगुवों को दें और उनसे मिलने का प्रयास करें, कम-से-कम साप्ताहिक प्रार्थना तथा आपसी प्रोत्साहित करने हेतु मिलते रहें।
8. वहां कोई कलीसिया हो तो उसके बारे में जानें: वे किन लोगों के मध्य जाते हैं, वे कितने लोग हैं, उनका आत्मिक स्तर क्या है, इत्यादि की जानकारी रखें।

9. अपने गृहनगर की सहायता-टीम से सम्पर्क बनाये रखें, उन्हें आपके लिये प्रार्थना व आर्थिक सहयोग करते रहने हेतु प्रोत्साहित करते रहें।
10. लोगों की भाषा को लगातार सीखते रहें।
11. हर एक अवसर को झपट लें कि दूसरों को अपने जीवन के बारे में, यीशु के द्वारा लाये गसे परिवर्तन के बारे में बतायें और यह भी कि वह उनके जीवन में कैसे आत्मिक बंधान से छुटकारा दिला सकता है।

पाठ 27

सताव का सामना करना

स्टीफन लीवरसेज

"पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे।" 2 तीमुथियुस 3:12

प्रस्तावना: सभी जो मसीह यीशु में भक्तिमय जीवन जीने के इच्छुक हैं वे सताएं जाएंगे। 2 तीमुथियुस 3:12

- यीशु ने हम से कहा है कि, "संसार में तुम्हें क्लेश होता हैं।" यूहन्ना 16:33
- पतरस लिखता है कि हम दु:ख उठाने के लिए बुलाए गए हैं। 1 पतरस 2:21

कुछ लोग प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर सताव आने देगा क्योंकि वे समझते हैं कि सताव बहुतों के उद्धार का कारण बनता है।

1. ऐसी प्रार्थना का उत्तर भारत में और दुनिया के और क्षेत्रें में अनेक बार मिल चुका है।
2. प्रतिदिन मसीही, कभी कम कभी अधिक, सताव का सामना करते ही हैं। हम उसका सामना कैसे करते हैं?

एक भूतपूर्व सांसद ने बताया कि भारतीय मसीही सताव का समाना तीन प्रकार से करते हैं।

1. कानून बनाने की मांग करते हुए;
2. उसके विरोध में प्रदर्शन करते हुए;
3. और उसे स्वीकार करके गले लगाते हुए। उन्हों ने कहा कि तीसरा प्रकार सर्वाधिक प्रभावकारी था।

हम सताव के प्रति कैसे प्रतिक्रिया दें इसके विषय में पौलुस स्पष्ट शिक्षा देता है। उसका सूत्र सरल नहीं है, परन्तु अंत में उसका परिणाम सफलता ही होता है - अर्थात् उसके द्वारा लोग मसीह के पास लाए जाते हैं। 12:9-21

1. वह हमें लिखता ह: "बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो" (वचन 9)।
2. वह हमें प्रोत्साहन देता है: "क्लेश में स्थिर रहो ख़ख़" (वचन 12)

3. पौलुस इससे अधिक यह भी कह देता है कि हम अपने सतानेवालों को आशीष दें। (वचन 14)
4. बदला लेने का, लोगों ने हम से जो बुरा किया उसके बदले में "जैसे को तैसा" देने का तो विचार भी नहीं आना चाहिए, क्योंकि यह उतना ही गलत होगा जितना कि बुराई का मूल कार्य था।
5. वह अपनी बात हमें यह प्रोत्साहन देते हुए समाप्त करता है कि हम बुराई को बुराई से न जीते, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लें। (वचन 21)

क्या इस सब का अर्थ यह निकलता है कि हम सताव की खोज में रहें, नुकसान की ओर दौडते रहें? नहीं, परन्तु इसका अर्थ यह अवश्य है कि हम सताव की अपेक्षा कर सकते हैं और उसके मध्य आनंदित रह सकते हैं, और हां, हम उस पर विजय पा सकते हैं।

1. एक सिद्ध उदाहरण, सर्वदा के समान, मसीह यीशु है, जिसने अपनी इच्छा से क्रूस को अपनाया, मित्रों तथा विरोधियों के सामने एक अपराधी की मृत्यु मरते हुए सार्वजनिक लज्जा को सह लिया। इब्रानियों 12:2
2. यहां हम इतिहास की सर्वाधिक बड़ी हार-परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु-को संसार की सब से बड़ी विजय में बदलते हुए देखते हैं जब वह कब्र में से विजयी रीति से जी उठा, उन सब के लिए उद्धार को प्राप्त करते हुए जो उस पर विश्वास करेंगे।
3. वह आज भी इसी रीति से काम करता है, और हमें इस बात को समझने की आवश्यकता है, जैसे उसने समझा था, कि जिन्हों ने उसे मारा वे लोग ही वह कारण थे जिनके लिए उसने अपना रक्त बहाया और प्राण दिया। इसी प्रकार, जो आज विश्वासियों को सताते हैं उन्हें मसीह यीशु की और उद्धार की अत्याधिक आवश्यकता है।
4. आइए हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर हम पर आनेवाले सताव का उपयोग बहुतों को अपनी ओर लाने के लिए करेगा, यहां तक की, तथा विशेषकर, उन्हें भी जो उसकी निंदा करते हैं और हमारी ओर मुक्के तानते और हमारे विरुद्ध एका करते हैं।

पाठ 28

पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर जाना
प्रेरितों 1:8

प्रस्तावना: जब यीशु ने अपने शिष्यों को अपने सुसमाचार को लेकर सारे संसार में जाने के लिए महान् आदेश दिया था तब उसके पहले कहा था कि पवित्र आत्मा उन पर उतरेगा, तब वे सामर्थ पाएंगे। प्रेरितों 1:8

- इसी प्रकार, प्रभु में हमारा परिश्रम व्यर्थ होगा, यदि परमेश्वर के आत्मा की पवित्र सामर्थ हम में नहीं है।
- हम प्रभु के अलौकिक सामर्थ के बिना अनंतकालिक परिणाम का कोई काम नहीं कर सकते; अवश्य है कि हम अपने परिश्रम के फल उत्पन्न करने के लिये पूर्णत: पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर रहें।
- हमें पवित्र आत्मा से परीपूर्ण होने की शिक्षा दी गई है।
  इफिसियों 5:18; प्रेरितों 2:4; रोमियों 8:9

पतरस का उदाहरण :

1. पवित्र आत्मा से भरे जाने से पहले वह भयभीत था और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य नहीं था। मत्ती 16:69-74
2. पवित्र आत्मा से भरे जाने बाद (प्रेरित अध्याय 2), पतरस अपने वचन बोलने में निडर और सामर्थी बन गया। प्रेरितों 5:29-32

इफिसियों अध्याय 6 से तीन महत्वपूर्ण शिक्षाएं :

1. हमें खोये हुये लोगों के बीच परमेश्वर के उद्धार का शुभ संदेश सुनाने के आत्मिक मल्लयुद्ध में लगने से पहले, "परमेश्वर के सारे हथियार" पहन लेने चाहिये। इफिसियों 6:1-11
2. जब हम खोये हुये लोगों के बीच परमेश्वर के अनुग्रह को प्रस्तुत करते हैं तब हम अपने नाशमान शत्रु (शैतान) को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । इफिसियों 6:12
3. हमें अपने सारे प्रयत्न को, और अपने स्वयं के जीवन को, प्रार्थना की

चादर से ढांक कर रखना चाहिये - "हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो।" इफिसियों 6:18

जब परमेश्वर का आत्मा हम में बना रहता है, वह हमें आत्मिक वरदान देता है।

1. आत्मिक वरदान वास्तव में वरदान ही हैं -- जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा दिये जाते हैं; उन्हें कमाया नहीं जा सकता, उन पर अधिकार जताया नहीं जा सकता, वे खरीदे नहीं जा सकते। इसलिए उन्हें वरदान कहा गया है।
2. पवित्र आत्मा के वरदान परमेश्वर की संतानों को, मसीह की देह अर्थात कलीसिया में सेवा करने और उसे बनाने के लिए दिये जाते हैं।
3. पवित्र शास्त्र में आत्मा के वरदानों की तीन सूचियां दी गई हैं:
   (क) रोमियों 12:6-8
   (ख) 1 कुरिन्थ 12:7-10 (ग) इफिसियों 4:11
4. इसलिये कि तीनों सूचियां एक दूसरे से भिन्न हैं, अनेक लोगों का मानना है कि वे पूरी नहीं हैं, दूसरे शब्दों में यह कि संभवत: और भी दूसरे आत्मिक वरदान हैं जो बाइबल की इन तीन सूचियों में सम्मिलित नहीं किये गये हैं।

जब पवित्र आत्मा हम में निवास करता है तब वह हमारे जीवन में अपना फल विकसित करता है।

1. पवित्र आत्मा का फल परमेश्वर की संतानों में परमेश्वर के चरित्र का प्रदर्शन है। इसका वर्णन गलातियों 5:22-23 में किया गया है।
2. एक वश्क्ष पर लगे फल के समान, आत्मा का फल भी धीरे-धीरे समय के साथ बढ़ता है और परिपक्व होता जाता है, जैसे-जैसे वह जड़ से पोषण पाता जाता है।
3. परमेश्वर की संतानों में उसका आत्मा वह फल लाता है जो हमें इस दुनिया के खोए हुओं के लिए उसके प्रेम, अनुग्रह, दया इत्यादि को चमकाने योग्य बनाता है।

यीशु हमें अपने आत्मा की भरपूरी में बाहर भेजता है

1. जब हम परमेश्वर की सामर्थ में जाते हैं, वह अद्भुत कामों को करेगा इफि 3:20-21
2. अंत में हम परमेश्वर के साथ जय पाएंगे। 2 पतरस 3:8-13

पाठ 29

यह कटनी का समय है

यूहन्ना 4:35

प्रस्तावना: यीशु ने, यूहन्ना 4 अध्याय में, हमें बताया है कि कटनी के लिए खेत पक चुके हैं। आज बीज बोने और फसल काटने का दिन है।

यीशु ने प्रायः आत्मिक सिद्धांतों को समझाने के लिए कृषि क्षेत्र के उदाहरणों का उपयोग किया था।

1. बीज बोने वाले के दृष्टांत में, यीशु ने सिखाया कि कुछ "भूमि" (लोगों के हृदय) "सुसमाचार के बीजों" को ग्रहण करेगी और बहुत फल लाएगी, जबकि दूसरी "भूमि" ऐसा नही करेगी। लूका 8:4-15
2. यीशु ने और भी दूसरी आत्मिक सच्चाइयों को समझने के लिए कृषि क्षेत्र के उदाहरणों का प्रयोग किया है, जैसे कि राई का दाना (मत्ती 13:31-32), गेहूँ और जंगली बीज (मत्ती 13:24-30), अंजीर का वृक्ष (मत्ती 24:32-35) और दाखलता एवं डालियाँ (यूहन्ना 15:1-9)।
3. यीशु ने इन दृष्टांतों का उपयोग, परमेश्वर के राज्य में आत्माओं की अच्छी फसल लाने के महत्व को सिखाने के लिए किया था।

यीशु ने कहा था कि पकी फसल तो बहुत हैं, परंतु मजदूर थोड़े हैं।
मत्ती 9:26-38

1. जब यीशु ने भीड़ को देखा तब उसे उन पर तरस आ गया। मत्ती 9:36
2. यह एक अनिवार्यता है कि खोये हुओं के मध्य, परमेश्वर के प्रेम और उद्धार को फैलाने के हमारे प्रयास, हमारे हृदयों में परमेश्वर के ऐसे ही तरस के द्वारा प्रेरित हों।
3. हम कितना कठिन परिश्रम करते हैं, या कितना बलिदान करते हैं, यह कोई अर्थ नहीं रखता; यदि हम उसे प्रेम से न करें तो हम एक झनझनाती हुई झांझ ही ठहरेंगे। 1 कुरिन्थियों 13:1

यीशु ने अपने शिष्यों से, कटनी के लिए और अधिक मजदूर भेजे जाने की

प्रार्थना करने कहा।

1. जिस प्रकार हम में परमेश्वर जैसा तरस होना अनिवार्य है, यह भी अनिवार्य है कि हम प्रार्थना करें और परमेश्वर से कटनी के लिए और मजदूर मांगें। मत्ती 9:38
2. हमें अकेले काम करके कभी संतुष्ट नहीं रहना चाहिए; सदैव प्रार्थना करते रहें और आशा रखें कि अन्य लोग आपके साथ जुड़ते जाएं।
3. मात्र प्रार्थना के द्वारा और आत्मिक युद्ध के अन्य हथियार धारण करने के द्वारा ही हम "गढ़ों को ढा" सकेंगे''।

यीशु ने अपने शिष्यों को उदारता से बीज बोने के लिए कहा। 2 कुरिन्थियों 9:6

1. मनुष्य जो बोता है, वही काटता है। गलातियों 6:7
2. यदि हम हियाव न छोड़ें तो हम कटनी काटेंगे। गलातियों 6:9
3. कभी-कभी हम आंसुओं के साथ बोते हैं; परंतु बाइबल में प्रतिज्ञा है कि हम जयजयकार करते हुए लवने पाएंगे। भजन 126:5-6

खेत कटनी के लिए पक चुके हैं। यूहन्ना 4:35

यीशु ने फिर उन से कहा, "तुम्हें शांति मिले, जैसे पिता ने तुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।" यूहन्ना 20:21

महान् आदेश से संबंधित प्रार्थना :

प्रभु परमेश्वर आपकी अगुवाई करे और आपको आशीष देवे

और जब आप आत्मिक अंधकार में रहने वालों को

उसके प्रेम और उद्धार की घोषणा करते हैं,

वह आपको अनेक आत्माओं का फल बहुतायत से प्रदान करे।